माहनामा

# फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

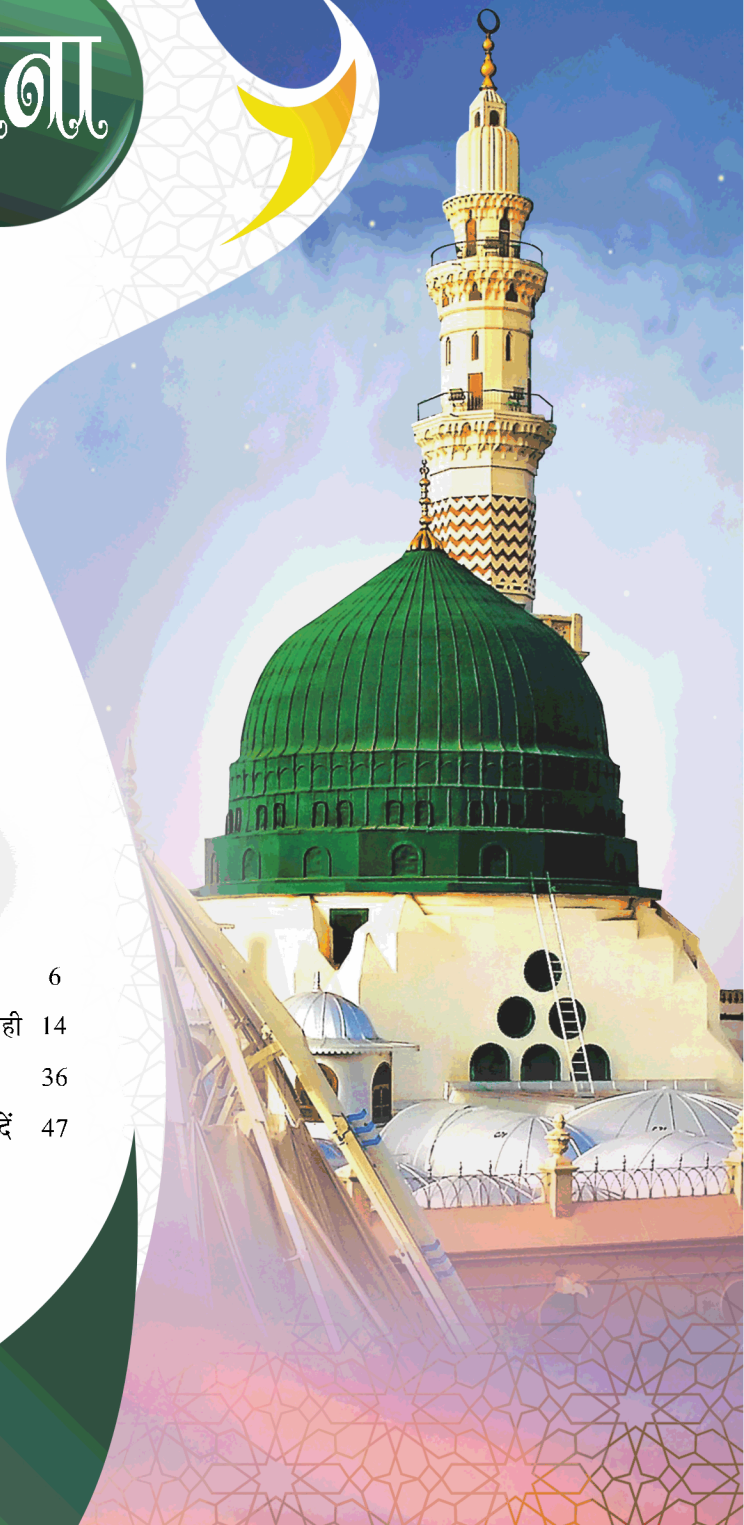

## जश्ने विलादत मुबारक हो


- पाकीज़ा ग़िज़ा 6
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही 14
- मुत़ालअ़ए सीरत के मक़ासिद 36
- बेटियों को महब्बत व इत़ाअ़त रसूल की तरबियत दें 47


**फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

अपने दिल में इ़श्क़े रसूल का चराग़ जलाइए, दुन्या व आख़िरत में कामयाबी होगी।

## कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिए

### “يَا قَوِيُّ”

11 बार पांचो नमाज़ो के बाद सर पर दाहिना हाथ रख कर पढ़ें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ाफ़िज़ा मज़बूत होगा।

**( नोट :** वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है ।)

### हवाई जहाज़ के गिरने और जलने से अमन में रहने की दुआ

हवाई जहाज़ में सुवार हो कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ ये दुआए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ ط
وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ ط وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِیَ
الشَّيْطٰنُ عِنْدَ الْمَوْتِ ط وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِيْلِكَ مُدْبِرًا
وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا ط

**तर्जमा :** या अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं, इमारत गिरने से और तेरी पनाह चाहता हूं बुलन्दी से गिरने और तेरी पनाह चाहता हूं डूबने जलने और बुढ़ापे (यानी ऐसे बुढ़ापे से जिस से ज़िन्दगी का अस्ल मक़्सूद फ़ौत हो जाए यानी ईल्म व अ़मल जाते रहें। (देखिए मिरआतुल मनाजीह़ 3/4) और तेरी पनाह त़लब करता हूं इस से कि शैत़ान मुझे मौत के वक़्त वस्वसे दे और तेरी पनाह चाहता हूं इस से कि तेरी राह में मैं पीठ फेरता मर जाऊं और तेरी पनाह चाहता हूं इस से कि सांप के डसने से इन्तिक़ाल करूं।

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स.40)

## हर बीमारी के लिए

### يَاسَلَامُ

मरीज़ ख़ुद या कोई और 101 बार “يَاسَلَامُ” पढ़ कर दम करे, इसी त़रह़ 101 मर्तबा “يَاسَلَامُ” पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लें, रोज़ाना दम कर के पानी पिएं तो ये ज़ियादा बेहतर है, इसी त़रह़ उठते बैठते “يَاسَلَامُ” का विर्द करते रहें।

(मदनी मुज़ाकरा, 8 रमज़ानुल मुबारक, 1433 ही.)

**(नोट :** वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।)

## शादी जल्दी हो और घर अच्छा चले

### يَاحَیُّ يَاقَيُّوْمُ

143 बार लिख कर तावीज़ बना कर कुंवारा अपने बाज़ू में बांधे या गले में पहन ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की जल्द शादी हो जाएगी और घर भी अच्छा चलेगा.

(मेंडक सुवार बिच्छू, स.23)

माहनामा

# फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine

FAIZANE MADINA (HINDI)

*माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर*
*या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर*

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

**PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER**

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

**PLACE OF PRINTING**

MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

**कुरआनो हदीस**

मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की क़ुरआनी तरग़ीबात 3 — पाकीज़ा ग़िज़ा 6

**फ़ैज़ाने सीरत**

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अल्क़ाब नवाज़ी 10 — रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही 14

**फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत** केली ग्राफ़िक्स डिज़ाइन में दुरूदे पाक लिखना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 16

**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** चलते फिरते क़ुरआने करीम की तिलावत करना कैसा? मअ़ दीगर सुवालात 18

**मज़ामीन**

काम की बातें 20 — सायए अ़र्श दिलाने वाली नेकियां 22

हमागीर इन्क़िलाब 24 — बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 27

**ताजिरों के लिए** अह़कामे तिजारत ९८

**बुज़ुर्गाने दीन की सीरत**

वोही भरते हैं झोलियां सब की 32 — अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 34

**मुतफ़र्रिक़** मुत़ालए सीरत के मक़ासिद 36

**क़ारेईन के सफ़ह़ात**

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक ख़्वाब 38 — नए लिखारी 40

**बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** महब्बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तक़ाज़े 43

शजरो ह़जर दीवार व दर में बदल गए 44 — जानवरों की कहानी / बच्चों ! इन से बचो 45

**इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"**

बेटियों को महब्बत व इत़ाअ़ते रसूल की तरबियत दें 47 — इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 49

( दूसरी और आख़िरी क़िस्त )

# मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की कुरआनी तरग़ीबात

गुज़श्ता शुमारे में बयान किया गया था कि कुरआने करीम ने मुख़्तलिफ़ मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र की दावत दी है।

कुफ़्फ़ारे मक्का अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़ुदरत व इख़्तियारात, मरने के बाद जी उठने और दीगर सिफ़ाते इलाहिय्या के मुन्किर थे, कुरआने करीम ने कई असालीब से ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा है, आइए ज़ैल में ग़ौरो फ़िक्र की दावत के इन मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों का मुत़ालआ़ करते हैं :

## परिन्दों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

कुरआने करीम ने परिन्दों की परवाज़, इन के हवा में ठहरने और परों को फैलाने और समेटने को बयान करते हुए भी रब्बे करीम की शाने तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र की तरग़ीब दिलाई है, चुनान्चे सूरतुन्नह़ल में फ़रमाया :

﴿اَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ(۷۹)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** क्या उन्हों ने परिन्दों की त़रफ़ न देखा जो आस्मान की फ़ज़ा में (अल्लाह के) हुक्म के पाबन्द हैं। इन्हें (वहां) अल्लाह के सिवा कोई नहीं रोकता। बेशक इस में ईमान वालों के लिए निशानियां हैं।[1]

इसी त़रह़ सूरतुल मुल्क में फ़रमाया :

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّ یَقْبِضْنَ ۛؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ(۱۹)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा रह़मान के बेशक वोह सब कुछ देखता है।[2]

## ज़मीन और नबातात की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की हर मख़्लूक़ एक अ़ज़ीम शाहकार है, किसी एक मख़्लूक़ पर ग़ौर करने वाला भी ख़ालिक़ो मालिक की शानो अ़ज़मत को समझ लेता है, कुरआने करीम ने ज़मीन और नबातात में भी ग़ौरो फ़िक्र की दावत दी है चुनान्चे फ़रमाया :

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِیْمٍ(۷) اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ(۸)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या उन्हों ने ज़मीन को न देखा हम ने उस में कितने इ़ज़्ज़त वाले जोड़े उगाए बेशक उस में ज़रूर निशानी है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।[3]

## मराह़िले तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

सूरए अ़नकबूत में फ़रमाया :

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا كَیْفَ یُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرٌ(۱۹) قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللّٰهُ یُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ(۲۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह पैदा करने की इब्तिदा कैसे करता है ?

फिर वोह उसे दोबारा बनाएगा बेशक येह अल्लाह पर बहुत आसान है । तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो अल्लाह क्यूं कर पहले बनाता है फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है ।[4]

## साए की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

कुरआने करीम ने ख़ालिक़े काइनात की शाने तख़्लीक़ पर ग़ौरो फ़िक्र की तरग़ीब के लिए साए की तख़्लीक़ को भी ज़िक्र फ़रमाया है और इस में ग़ौरो फ़िक्र कर के शाने रब्बी समझने पर उभारा है, चुनान्चे सूरतुन्नह्ल में है :

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ یَّتَفَیَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْیَمِیْنِ وَ الشَّمَآىٕلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَ هُمْ دٰخِرُوْنَ(۴۸)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और क्या उन्हों ने इस त़रफ़ न देखा कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा फ़रमाई है उस के साए अल्लाह को सज्दा करते हुए दाएं और बाएं झुक्ते हैं और वोह साए आजिज़ी कर रहे हैं ।[5]

## रात और दिन की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

रात और दिन के आने जाने पर भी ग़ौरो फ़िक्र की दावत दी गई है, चुनान्चे सूरतुन्मल में है :

﴿اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّیْلَ لِیَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ(۸۶)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने रात बनाई कि उस में आराम करें और दिन को बनाया सुझाने (दिखाने) वाला बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिए कि ईमान रखते हैं ।[6]

## तक़्सीमे रिज़्क़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

सूरतुर्रूम में फ़रमाया :

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ(۳۷)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या उन्हों ने न देखा कि अल्लाह रिज़्क़ वसीअ फ़रमाता है जिस के लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिए चाहे बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिए ।[7]

## निज़ामे आब और खेती की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَ اَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا یُبْصِرُوْنَ(۲۷)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं ख़ुश्क ज़मीन की त़रफ़ फिर उस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह ख़ुद खाते हैं तो क्या उन्हें सूझता नहीं ।[8]

## अल्लाह की कुदरत व इख़्तियारात में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

﴿اَفَلَمْ یَرَوْا اِلٰى مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَیْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ(۹)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या उन्हों ने न देखा जो उन के आगे और पीछे है आस्मान और ज़मीन हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें बेशक उस में निशानी है हर रुजूअ लाने वाले बन्दे के लिए ।[9]

## चोपायों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

﴿اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَیْدِیْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ(۷۱) وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ مِنْهَا یَاْكُلُوْنَ(۷۲) وَ لَهُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ وَ مَشَارِبُ ؕ اَفَلَا یَشْكُرُوْنَ(۷۳)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उन के लिए पैदा किए तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिए नर्म कर दिया तो किसी पर सुवार होते और किसी को खाते हैं और उन के लिए उन में कई त़रह़ के नफ़्अ और पीने की चीज़ें हैं तो क्या शुक्र न करेंगे ।[10]

## ज़मीनो आस्मान की नेमतों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

﴿اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ(۲۰)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में हैं और तुम्हें भरपूर दीं अपनी नेमतें ज़ाहिर और छुपी और बाज़ आदमी अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं यूं कि न इल्म न अक़्ल न कोई रौशन किताब।[11]

क़ारिईने किराम ! इन आयाते मुबारका का खुलासा येही है कि क्या इन काफ़िरों ने देखा कि अल्लाह तआ़ला पैदा करने की इब्तिदा कैसे करता है और दर्जा ब दर्जा तख़्लीक़ को मुकम्मल करता है, फिर आख़िरत में दोबारा ज़िन्दा करेगा। अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को पहले कैसे बनाता, फिर मौत देता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र कर के अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व शाने तख़्लीक़ के अ़ज़ाइबात से उस के ख़ालिक़ो मालिक होने की मारिफ़त ह़ासिल कर सको।

और देखो कि अल्लाह तआ़ला ने चीज़ों के साए पैदा फ़रमाए और साए का कैसा अन्दाज़ है कि सूरज तुलूअ़ होते वक़्त उस का साया एक त़रफ़ होता है तो ग़ुरूब होते वक़्त दूसरी त़रफ़। येह भी एक समझने की बात है कि साया दाएं और बाएं झुकने में अल्लाह तआ़ला के हुक्म का पाबन्द है, जब कुफ़्फ़ार सायादार चीज़ों का येह ह़ाल अपनी आंखों से देखते हैं तो उन्हें चाहिए कि वोह उस में ग़ौरो फ़िक्र कर के अल्लाह करीम की शाने तख़्लीक़ का एतिराफ़ करें।

और परिन्दों के वुजूद और परवाज़ पर ग़ौर करें कि कैसे हल्के और भारी हर त़रह़ के जिस्म के साथ फ़ज़ा में उड़ते हैं, भला वोह कौन है जो उन्हें गिरने नहीं देता, ह़ालांकि फ़ज़ा में तो एक तिन्का भी नहीं रुक्ता, यक़ीनन कोई अ़ज़ीम ज़ात है जो इस सब पर क़ादिर है और वोह अल्लाह की ज़ात है। ईमानदार उस में ग़ौर कर के क़ुदरते इलाही का एतिराफ़ करते हैं।

इसी त़रह़ कुफ़्फ़ारे मक्का को ज़मीन के अ़जाइबात और इस से उगने वाली त़रह़ त़रह़ की नबातात के जोड़ों पर ग़ौर करना चाहिए कि इन नबातात से इन्सान व जानवर दोनों नफ़्अ़ उठाते हैं।

येह ख़ालिक़े काइनात ही की शान है कि ख़ुश्क ज़मीन जिस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं होता, पानी भेजता है और उसे ज़िन्दा फ़रमाता है, फिर उस से खेती निकालता है, चाहिए तो येह था कि येह लोग इन निशानियों से अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के कमाल पर इस्तिदलाल करें और समझें कि जो क़ादिरे बरह़क़ ख़ुश्क ज़मीन से खेती निकालने पर क़ादिर है तो मुर्दों को ज़िन्दा कर देना भला कैसे उस की क़ुदरत से बई़द हो सकता है।

कुफ़्फ़ारे मक्का की अ़क़्ल व दानिश को यूं भी ललकारा गया कि देखो येह जो तुम मरने के बाद दोबारा उठाए जाने के मुन्किर हो, ज़रा ग़ौर तो करो कि जो ज़ात दिन को रात और रात को दिन में बदलने पर क़ादिर है, भला वोह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क्यूंकर क़ादिर न होगा, यक़ीनन वोह क़ादिर है।

अल ग़रज़ ! क़ुरआने करीम ने त़रह़ त़रह़ से दावते फ़िक्र दी है, ज़रा सा शुऊ़र व अ़क़्ल से काम लिया जाए तो काइनात में हर त़रफ़ हज़ार हा ऐसे मनाज़िर हैं जो बन्दे को सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि येह निज़ाम कैसे चल रहा है ? भला येह कैसे मुमकिन है कि बारिश हो और मुर्दा ज़मीन सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ी त़ौर पर ज़िन्दा हो जाए ? हल्के से हल्का काग़ज़ भी फ़ज़ा में रुक न सके तो भारी भरकम शाहीन, गिध वग़ैरा कैसे रुक रहे हैं ? सूरज, चान्द और हज़ारों लाखों सय्यारे, सितारे किस इत्तिफ़ाक़ के तह़त चल रहे हैं। जी हां ! वोह ज़ात सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ज़ात है, येही क़ुरआने करीम की दावते तफ़क्कुर है।

---

(1)پ14،النحل:79(2)پ29،الملک:19(3)پ19،الشعراء:7،8(4)پ20،العنکبوت:19،20(5)پ14،النحل:48(6)پ20،النمل:86(7)پ21،الروم:37(8)پ21،السجدۃ:27(9)پ22،سبا:9(10)پ23،یٰسین:71تا73(11)پ21،لقمان:20۔

लो मदीने का फूल लाया हूं  मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं
(अज़् अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

# पाकीज़ा ग़िज़ा

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اَطْیَبَ مَا اَکَلْتُمْ مِنْ کَسْبِکُمْ وَاِنَّ اَوْلَادَکُمْ مِنْ کَسْبِکُمْ

यानी सब से पाकीज़ा ग़िज़ा वोह है जो तुम्हारी अपनी कमाई से हो और तुम्हारी औलाद भी तुम्हारी अपनी कमाई से है।[1]

## शर्हे ह़दीस

इस ह़दीस शरीफ़ में दो बातों का बयान है : अपनी कमाई का खाना त़य्यिब व पाकीज़ा होना और औलाद की कमाई से खाना।

शारेह़े ह़दीस अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : यानी ह़लाल तरीन कमाई वोह है जो बन्दा अपनी मेह़नत से ह़ासिल करे जैसे कारीगरी या तिजारत या ज़राअ़त वग़ैरा के ज़रीए से।[2]

इस में येह तो वाज़ेह़ है कि अपनी मेह़नत का ज़रीआ़ जो भी हो उस का शरीअ़त के अह़काम के मुत़ाबिक़ होना और ह़राम और धोके से पाक होना लाज़मी है तभी वोह कमाई ह़लाल व पाकीज़ा होगी।

## ह़लाल कमाई के लिए सई करने पर तेह़सीन

ह़लाल कमाई के लिए भाग दौड़ करने वाले को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह की राह में कोशिश करने वाला फ़रमाया है चुनान्चे एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़रा तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उस के फ़ुरतीले बदन की मज़बूती और चुस्ती को देखा तो अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश इस का येह ह़ाल अल्लाह करीम की राह में होता। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर येह शख़्स अपने छोटे बच्चों के लिए रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो येह अल्लाह पाक की राह में है और अगर येह शख़्स अपने बूढ़े वालिदैन के लिए रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो भी येह अल्लाह की राह में है और अगर येह अपनी पाक दामनी के लिए रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो भी येह अल्लाह की राह में है और अगर येह दिखावे और तफ़ाख़ुर के लिए निकला है तो येह शैत़ान की राह में है।[3]

ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शुरूअ़ में ज़िक्र की गई ह़दीस शरीफ़ के तह़त लिखते हैं : यानी अपने को बेकार न रखो बल्कि रोज़ी कमाओ और कमा कर खाओ।[4]

हमें रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत से भी येही दर्स मिलता है और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की अ़मली तरबियत दी है चुनान्चे मशहूर रिवायत है कि एक अन्सारी ने हुज़ूर पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारे घर में कुछ नहीं है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी है और वोह एक टाट है जिस का एक ह़िस्सा हम ओढ़ते हैं और एक ह़िस्सा बिछाते हैं और एक लकड़ी का प्याला है जिस में हम पानी पीते हैं । इरशाद फ़रमाया : दोनो चीज़ों को मेरे हुज़ूर ह़ाज़िर करो । उन्हों ने ह़ाज़िर कर दीं तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक में ले कर इरशाद फ़रमाया : इन्हें कौन ख़रीदता है ? एक साह़िब ने अ़र्ज़ की : एक दिरहम के इ़वज़ में ख़रीदता हूं । इरशाद फ़रमाया : एक दिरहम से ज़ियादा कौन देता है ? येह बात दो या तीन बार फ़रमाई तो किसी और साह़िब ने अ़र्ज़ की : मैं दो दिरहम के बदले लेता हूं । उन्हें येह दोनों चीज़ें दे दीं और दिरहम ले लिए और अन्सारी को दोनों दिरहम दे कर इरशाद फ़रमाया : एक का ग़ल्ला ख़रीद कर घर डाल आओ और एक की कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास लाओ । वोह ले कर ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उस में दस्ता डाला और फ़रमाया : जाओ लकड़ियां काटो और बेचो और पन्दरह दिन तक मैं तुम्हें न देखूं (यानी इतने दिनों तक यहां ह़ाज़िर न होना) । वोह गए और लकड़ियां काट कर बेचते रहे, पन्दरह दिन के बाद ह़ाज़िर हुए तो उन के पास दस दिरहम थे, चन्द दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और चन्द का ग़ल्ला । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह उस से बेहतर है कि क़ियामत के दिन सुवाल तुम्हारे मुंह पर छाला बन कर आता ।"[5]

## ह़लाल व पाकीज़ा कमाई के मज़ीद फ़वाइद

यहां ह़लालो पाकीज़ा कमाई की अहमिय्यत को मज़ीद उजागर करने के लिए तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए चुनान्चे,

1 जिस शख़्स ने ह़लाल माल कमाया फिर उसे ख़ुद खाया या उस कमाई से लिबास पहना और अपने इ़लावा अल्लाह तआ़ला की दीगर मख़्लूक़ (जैसे अपने अहलो इ़याल और दीगर लोगों) को खिलाया और पहनाया तो उस का येह अ़मल उस के लिए बरकत व पाकीज़गी है ।[6]

2 ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : आप दुआ़ फ़रमाइए कि अल्लाह पाक मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमाया करे । तो क़ासिमे नेमत, नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَاسَعْد ! اَطِبْ مَطْعَمَكَ تَكُنْ مُسْتَجَابَ الدَّعْوَةِ

यानी ऐ सअ़द ! अपने खाने को पाकीज़ा बनाओ तुम्हारी दुआ़एं क़बूल हुवा करेंगी ।[7]

3 जिस ने 40 दिन तक ह़लाल खाया, अल्लाह करीम उस के दिल को मुनव्वर फ़रमा देगा और उस की ज़बान पर ह़िक्मत के चश्मे जारी फ़रमा देगा और दुन्या व आख़िरत में उस की रहनुमाई फ़रमाएगा ।[8]

## ह़दीसे पाक का दूसरा ह़िस्सा

"وَاِنَّ اَوْلَادَكُمْ مِنْ كَسْبِكُمْ" और तुम्हारी औलाद भी तुम्हारी अपनी कमाई से है ।" के तह़त शारेह़े ह़दीस मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : और औलाद की कमाई भी तुम्हारी अपनी कमाई ही है कि बिल वासित़ा वोह गोया तुम ही ने कमाया है ।[9]

एक ह़दीसे पाक में है कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया बोला कि मेरे पास माल है और मेरे वालिद मेरे माल के मोह़ताज हैं, फ़रमाया : तुम और तुम्हारा माल तुम्हारे बाप का है, यक़ीनन तुम्हारी औलाद तुम्हारी पाकीज़ा कमाई से है, अपनी औलाद की कमाई खाओ ।[10]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से चन्द मस्अले मालूम हुए : ग़नी औलाद पर फ़क़ीर मां बाप का ख़र्चा वाजिब है और अगर मां बाप ग़नी हों उन्हें औलाद के माल की ज़रूरत न हो तो

हदाया देते रहना मुस्तहब है । (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) ख़याल रहे कि बच्चे को मां ख़ून पिला कर पालती है बाप माल खिला कर यानी जानी ख़िदमत मां करती है और माली ख़िदमत बाप, इसी वजह से इरशाद हुवा कि जन्नत तुम्हारी माओं के क़दमों के नीचे है और यहां इरशाद हुवा कि तुम और तुम्हारा माल तुम्हारे बाप का है, जैसी परवरिश वैसा उस का शुक्रिया । येह है उस सरकार सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्साफ़ ।[11]

एक और रिवायत में है कि "एक शख़्स बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह ! मेरे बाप ने मेरा माल ले लिया है ।" तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न इरशाद फ़रमाया : "जाओ और अपने बाप को ले कर आओ ।" इतने में हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : अल्लाह करीम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम भेजा है और इरशाद फ़रमाया है कि "जब वोह बूढ़ा शख़्स आए तो इस बात के मुतअ़ल्लिक़ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएं जो उस ने अपने दिल में कही और जिसे उस के कानों ने भी न सुना ।"

जब बूढ़ा शख़्स हाज़िर हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे बेटे का क्या मुआ़मला है ? वोह शिकायत कर रहा है कि तुम उस का माल लेना चाहते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से पूछिए कि क्या मैं ने वोह माल उस की फूफियों, ख़ालाओं और अपने आप पर ख़र्च नहीं किया ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ठीक है (लेकिन) मुझे वोह बताओ जो तुम ने अपने दिल में कहा और तुम्हारे कानों ने भी न सुना ।" बूढ़े ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह पाक यक़ीनन हमें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत का वाफ़िर हिस्सा अ़ता फ़रमाएगा, मैं ने अपने दिल में एक ऐसी बात कही जो मेरे कानों ने भी न सुनी ।" इरशाद फ़रमाया : "अब तुम बोलो और मैं सुनता हूं ।" अ़र्ज़ की : "मैं ने (अशआ़र में) येह कहा था :

اِذَا لَيْلَةٌ ضَاقَتْكَ بِالسَّقَمِ لَمْ اَبِتْ
لِسَقَمِكَ اِلَّا سَاهِرًا اَتَمَلْمَلُ
كَاَنِّيْ اَنَا الْمَطْرُوْقُ دُوْنَكَ بِالَّذِيْ
طُرِقْتَ بِهٖ دُوْنِيْ فَعَيْنَيَّ تَهْمِلُ
تَخَافُ الرَّدٰى نَفْسِيْ عَلَيْكَ وَاِنَّهَا
لَتَعْلَمُ اَنَّ الْمَوْتَ وَقْتٌ مُؤَجَّلُ
فَلَمَّا بَلَغْتَ السِّنَّ وَالْغَايَةَ الَّتِيْ
اِلَيْهَا مَدٰى مَا فِيْكَ كُنْتُ اُؤَمِّلُ
جَعَلْتَ جَزَآئِيْ غِلْظَةً وَفَظَاظَةً
كَاَنَّكَ اَنْتَ الْمُنْعِمُ الْمُتَفَضِّلُ
فَلَيْتَكَ اِذْ لَمْ تَرْعَ حَقَّ اُبُوَّتِيْ
فَعَلْتَ كَمَا الْجَارُ الْمُجَاوِرُ يَفْعَلُ
تَرَاهُ مُعِدًّا لِلْخِلَافِ كَاَنَّهٗ
بِرَدِّيْ عَلٰى اَهْلِ الصَّوَابِ مُوَكَّلُ

**तर्जमा :**

1 मैं ने बचपन में तेरी परवरिश की और जवानी तक तुझ पर एह़सान किया, जो तेरी ख़ातिर कमाता तू उसी के खाने पीने में लगातार मशग़ूल रहा ।

2 जब रात ने बीमारी में तुझे कमज़ोर कर दिया तो मैं तेरी बीमारी की वजह से रात भर बे क़रारी की ह़ालत में बेदार रहा ।

3 गोया तेरी जगह मैं उस मरज़ का शिकार था जिस ने तुझे अपनी लपेट में ले लिया था जिस के सबब मेरी आंखें थमने का नाम न लेती थीं ।

4 मेरा दिल तेरी हलाकत से डर रहा था ह़ालांकि उसे मालूम था कि मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है ।

5 जब तू भरपूर जवानी की उ़म्र को पहुंचा जिस की मैं अ़र्सए दराज़ से तमन्ना कर रहा था ।

6 तो तू ने मेरे एह़सान का बदला इन्तिहाई सख़्ती की सूरत में दिया गोया फिर भी तू ही एह़सान और मेहरबानी करने वाला है ।

7 और तूने मेरे बाप होने का लिहाज़ तक न किया बल्कि ऐसा सुलूक किया जैसे पड़ोसी पड़ोसी के साथ करता है।

8 आप उसे (यानी मेरे बेटे को) हर वक़्त मेरी मुख़ालिफ़त पर तैय्यार पाएंगे गोया उसे अहले हक़ का इन्कार करने पर ही मुक़र्रर किया गया हो।

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : पस उसी वक़्त सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के बेटे को जलाल से फ़रमाया : "तू और तेरा माल तेरे बाप का है।"(12)

## कितना कमाना ज़रूरी है

येह जानना भी ज़रूरी है कि किस क़दर कमाना लाज़िम और कितना मुस्तहब है चुनान्चे बहारे शरीअ़त में है : इतना कमाना फ़र्ज़ है जो अपने लिए और अहलो अ़याल के लिए और जिन का नफ़्क़ा उस के ज़िम्मे वाजिब है उन के नफ़्क़े के लिए और अदाए दैन (यानी क़र्ज़ वग़ैरा अदा करने) के लिए किफ़ायत कर सके इस के बाद उसे इख़्तियार है कि इतने ही पर बस करे या अपने और अहलो अ़याल के लिए कुछ पस मान्दा रखने की भी सई व कोशिश करे। मां बाप मोहताज व तंगदस्त हों तो फ़र्ज़ है कि कमा कर उन्हें ब क़दरे किफ़ायत दे। क़दरे किफ़ायत से ज़ाइद इस लिए कमाता है कि फ़ुक़रा व मसाकीन की ख़बर गीरी कर सकेगा या अपने क़रीबी रिश्तेदारों की मदद करेगा येह मुस्तहब है और येह नफ़्ल इबादत से अफ़्ज़ल है और अगर इस लिए कमाता है कि मालो दौलत ज़ियादा होने से मेरी इज़्ज़तो वक़ार में इज़ाफ़ा होगा, फ़ख़्र व तकब्बुर मक़्सूद न हो तो येह मुबाह है और अगर महज़ माल की कसरत या तफ़ाख़ुर मक़्सूद है तो मन्अ़ है।(13)

## दर्से हदीस

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हदीसे पाक और इस की शर्ह से वाज़ेह होता है कि

- रिज़्क़े हलाल कमाने की कोशिश करनी चाहिए।
- इस क़दर कमाना ज़रूरी है कि अहलो इयाल और वालिदैन की कमाहक़्क़ुहू ज़रूरतें पूरी कर सकें और किसी के आगे सुवाल न करना पड़े।
- बेकार रहना इज़्ज़ते नफ़्स के भी ख़िलाफ़ है और मुल्की मईशत के भी।
- रिज़्क़े हलाल कमाने के लिए मेहनत करने से बे रोज़गारी में कमी आएगी और मईशत का फ़ाइदा होगा।
- मुआशरे के वोह वेले और फ़ारिग़ लोग जो दूसरों पर बोझ बने रहते हैं और समझते हैं उन्हें तो बस बैठे बिठाए कोई बड़ी नौकरी मिले, येह मिज़ाजे शरीअ़त नहीं। अपनी तरफ़ से हर जाइज़ और मुमकिन कोशिश करनी चाहिए जैसा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अन्सारी नौजवान को सुवाल से रोका और रिज़्क़े हलाल की सई के लिए मुख़्तसर अस्बाब को बरूए कार लाने की अ़मली तरबियत दी।

## ख़ुलासा

मालो दौलत ऐसी चीज़ है जिस से दुन्या का कोई भी शख़्स बे नियाज़ नहीं हो सकता चाहे वोह मर्द हो या औरत, बच्चा हो या बूढ़ा, आ़लिम हो या जाहिल ! क्यूंकि ज़िन्दा रहने के लिए रोटी, तन ढांपने के लिए कपड़े, सर छुपाने के लिए मकान, सफ़र के लिए सुवारी और बीमारी के इलाज के लिए दवाई वग़ैरा हर इन्सान की बुन्यादी ज़रूरियात हैं और येह चीज़ें माल के ज़रीए ही हासिल हो सकती हैं। अगर इन्सान को बिलकुल ही माल न मिले तो मोहताजी होती है और अगर ज़ियादा मिल जाए तो सरकशी का ख़तरा रहता है। अलग़रज़ माल में जहां बेशुमार फ़ाइदे हैं वहीं इस की आफ़ात भी बे हिसाब हैं।

अल्लाह करीम हमें रिज़्क़े हलाल के लिए कोशिश करने और हर ना जाइज़ ज़रीए से बचते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)ابن ماجہ، 3/80، حدیث: 2290(2)مرقاۃ المفاتیح، 6/21، تحت الحدیث: 2770 (3)الترغیب والترہیب، 3/31، حدیث:3041(4)مراٰۃ المناجیح، 4/233 (5)ابو داؤد، 2/168، حدیث: 1641(6)ابن حبان، جز6، 4/218، حدیث: 4222 (7) معجم اوسط، 5/34، حدیث:6495(8)اتحاف السادۃ، 6/450 (9)مراٰۃ المناجیح، 4/233(10)ابوداؤد، 3/403، حدیث:3530-ابن ماجہ، 3/81، حدیث: 2292(11)مراٰۃ المناجیح، 5/165 (12) معجم صغیر للطبرانی، ص62، حدیث:944(13)بہارِ شریعت، 3/609۔

# रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم की अल्क़ाब नवाज़ी

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां एक अ़ज़ीम पैग़म्बर, सय्यिदुल मुर्सलीन और मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त हैं वहीं आप इन्सानिय्यत के ह़क़ीक़ी मोह़सिन और अहल को इस की अहलिय्यत व शान के मुत़ाबिक़ नवाज़ने वाले भी हैं, आप का नवाज़ना कई त़रह़ से है मसलन ओ़हदा व मन्सब के एतिबार से, ज़िम्मेदारी के एतिबार से और नाम के एतिबार से इसी त़रह़ नवाज़ने में लक़ब से नवाज़ना भी आता है। किसी को पुकारने या लक़ब देने के तअ़ल्लुक़ से जब हम प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते पाक का मुत़ालआ़ करते हैं तो इस ह़वाले से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बे मिसाल अन्दाज़ मिलता है। आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में कई सह़ाबए किराम को अल्क़ाबात से नावाज़ा और सह़ाबए किराम ने उन अल्क़ाबात को दिलो जान से न सिर्फ़ क़बूल किया बल्कि कई सह़ाबा को मिला हुवा लक़ब उन के नाम से ज़ियादा मशहूर हो गया।

**अल्क़ाब क्या है?** **"अल्क़ाब"** जम्अ़ है **"लक़ब"** की। लक़ब अस्ल नाम के इ़लावा वोह नाम होता है जिस में किसी ख़ूबी या ख़ामी का पहलू निकले।[1]

दीने इस्लाम में किसी को बुरे नाम व लक़ब से पुकारने की मुमानअ़त है जबकि अच्छे नाम और अल्क़ाबात से पुकारना जहां अल्लाह और उस के रसूल को पसन्द है वहीं मुसलमानों की आपसी मह़ब्बत का सबब भी है। इस ह़वाले से दो अह़ादीस मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन चीज़ें तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी सच्ची मह़ब्बत का बाइ़स बनेंगी : (1) जब तुम उसे मिलो तो सलाम करो (2) मजलिस में उस के लिए फ़राख़ी और वुस्अ़त पैदा करो और (3) उसे उस के पसन्दीदा नाम से बुलाओ।[2]

2 हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि किसी शख़्स को उस के मह़बूब नाम व कुन्यत से बुलाया जाए।[3]

आइए ! ज़ैल में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अल्क़ाब नवाज़ी की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा करते हैं :

**1 अ़तीक़** इस का माना है : **"आज़ाद"**। येह वोह पहला लक़ब है जो इस्लाम में सब से पहले उस हस्ती को दिया गया जिसे दुन्या **"सिद्दीक़े अकबर"** के नाम से जानती है।[4] हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिशारत देते हुए फ़रमाया : اَنْتَ عَتِیْقٌ مِّنَ النَّارِ यानी तू नारे दोज़ख़ से आज़ाद है। इस लिए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह लक़ब हुवा।[5]

**2 फ़ारूक़** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र व ज़क्वान رحمۃُ اللہ علیہما ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : مَنْ سَمَّى عُمَرَ الْفَارُوْقَ؟ यानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ारूक़ का लक़ब किस ने दिया ? फ़रमाया : "नबिय्ये करीम

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ।"[6]

**3 मुहद्दस** "मुहद्दस" अ़रबी ज़बान में उस शख़्स को कहा जाता है जिसे सहीह़ और दुरुस्त बात का इल्हाम हो ।[7] येह लक़ब भी ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दिया गया । अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पिछली उम्मतों में कुछ लोग मुहद्दस होते थे, अगर मेरी उम्मत में उन में से कोई है तो वोह बिला शुबा उ़मर बिन ख़त्ताब है ।"[8]

**4 मिफ़्ताहुल इस्लाम** येह लक़ब भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे रिसालत से अ़ता हुवा । एक दफ़्आ़ रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म को देख कर मुस्कुरा दिए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने ख़त्ताब ! तुम्हें मालूम है मैं क्यूं मुस्कुराया ?" अ़र्ज़ किया : अल्लाह पाक और उस का रसूल ही बेहतर जानते हैं । फ़रमाया : अल्लाह पाक ने अ़रफ़ात की रात तुम्हारी त़रफ़ शफ़्क़त व रह़मत की नज़र फ़रमाई और तुम्हें "मिफ़्ताहुल इस्लाम" (यानी इस्लाम की चाबी) क़रार दिया ।"[9]

**5 रफ़ीक़** येह लक़ब ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे रिसालत से मिला, चुनान्चे नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर नबी का कोई रफ़ीक़ (साथी) होता है मेरे रफ़ीक़ यानी जन्नत में उ़स्मान हैं ।[10]

**6 असदुल्लाह** येह लक़ब मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे रिसालत से अ़ता हुवा । चुनान्चे एक मौक़ेअ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : अ़ली कहां हैं ? ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं यहां हूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे क़रीब आओ । ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه क़रीब आए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली को अपने मुबारक सीने से लगा कर दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم कहते हैं कि हम ने देखा कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू बह कर रुख़्सारे मुबारक की बरकतें ले रहे थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ पकड़ कर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गिरोह ! येह अ़ली बिन अबी त़ालिब हैं, मुहाजिरीनो अन्सार के सरदार हैं, मेरे भाई हैं, मेरे चचा के लड़के हैं, मेरे दामाद हैं, मेरा ख़ून हैं, मेरा गोश्त हैं, अबू सिब्त़ैन हैं, ह़सनो हु़सैन जन्नती नौजवानों के सरदारों के वालिद हैं, येह वोह शख़्स है जिस ने मेरे ग़म अपने ज़िम्मे ले लिए थे । येह असदुल्लाह (अल्लाह के शेर), अल्लाह की तल्वार हैं, इन के दुश्मनों पर अल्लाह की लानत हो । जो इन से बेज़ार होगा अल्लाह उस से बेज़ार होगा, मैं भी उस से बेज़ार होउंगा, जो यहां मौजूद हैं मेरी येह बातें उन तक पहुंचा दें जो यहां मौजूद नहीं हैं ।[11]

**7 अमीनुल उम्मत** येह ख़ूब सूरत लक़ब उस हस्ती को अ़ता हुवा जो अ़शरए मुबश्शरा (जन्नत की ख़ुशख़बरी पाने वाले 10 सह़ाबए किराम) में से हैं और इन्हें अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ कहा जाता है । ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर उम्मत में एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ हैं ।"[12]

अहले नजरान बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारे पास एक ऐसा आदमी भेज दीजिए जो अमीन (अमानत दार) हो ।" इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हारे पास एक ऐसा अमीन भेजूंगा जो वैसा ही अमीन है जैसा उसे होना चाहिए ।" तो लोगों ने देखा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़जरते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भेजा ।[13]

**8 ह़वारी** येह लक़ब पाने वाले अ़ज़ीम सह़ाबी "ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और ह़ज़रते त़ल्ह़ा" हैं । बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "हर नबी के ह़वारी हैं और मेरे ह़वारी (मुख़्लिस दोस्त) ज़ुबैर बिन अ़व्वाम हैं ।"[14]

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ साथ ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी इस लक़ब से नवाज़ा है । चुनान्चे अल्लाह पाक के

आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के इरशाद फ़रमाया कि आज रात मैं ने जन्नत में तुम सब के मक़ामो मर्तबे का मुशाहदा किया। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्त़ज़ा, सय्यिदुना त़ल्ह़ा, सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जन्नत में मक़ामो मरतबा बयान किया और ह़ज़रते त़ल्ह़ा व ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ त़ल्ह़ा व ज़ुबेर ! हर नबी के ह़वारी हैं और मेरे ह़वारी तुम दोनों हो।"[15]

**9 त़य्यिब व मुत़य्यब** येह प्यारा लक़ब पाने वाले ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا हैं। आप क़दीमुल इस्लाम मोमिनीन से हैं, इस्लाम की वजह से आप को मक्का वालों ने बहुत ही दुख दिए ताकि इस्लाम छोड़ दें, मुशरिकीन एक बार आप को आग से जला रहे थे इत्तिफ़ाक़न हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां से गुज़रे तो आग से फ़रमाया : ऐ आग अ़म्मार पर उसी त़रह़ ठन्डी और सलामती वाली हो जा जिस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम पर हुई थी।[16]

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठा हुवा था, अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अन्दर आने की इजाज़त चाही तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उन्हें आने की इजाज़त दो, "त़य्यिब व मुत़य्यब यानी पाक व पाकीज़ा शख़्स" को ख़ुश आमदीद।[17]

**10 असदुल्लाह व असदुर्रसूलुह** नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के जनाज़े के वक़्त "**असदुल्लाह व असदुर्रसूलुह**" के लक़ब से नवाज़ते हुए फ़रमाया :

يَاحَمْزَةُ يَاعَمَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَاَسَدَ اللّٰهِ وَاَسَدَ رَسُوْلِهٖ، يَاحَمْزَةُ يَافَاعِلَ الْخَيْرَاتِ، يَاحَمْزَةُ يَاكَاشِفَ الْكُرُبَاتِ، يَاحَمْزَةُ يَاذَابًّا عَنْ وَجْهِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

यानी ऐ ह़म्ज़ा ! ऐ रसूलुल्लाह ! के चचा, अल्लाह और उस के रसूल के शेर ! ऐ ह़म्ज़ा ! ऐ भलाइयों में पेश पेश रहने वाले ! ऐ ह़म्ज़ा ! ऐ रंजो मलाल और परेशानियों को दूर करने वाले ! ऐ ह़म्ज़ा ! रसूलुल्लाह के चेहरे से दुश्मनों को दूर भगाने वाले !।[18]

**11 सय्यिदुल मुअज़्ज़िनीन** येह लक़ब सुनते ही जो शख़्सिय्यत ज़ेहन में आती है दुन्या उस को "**बिलाल ह़ब्शी**" के नाम से जानती है। ह़ज़रते बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को न सिर्फ़ मुअज़्ज़िने रसूल होने का शरफ़ ह़ासिल है बल्कि सय्यिदुल मुअज़्ज़िनीन का लक़ब ज़बाने मुस्त़फ़ा से अ़त़ा हुवा है। चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

نِعْمَ الْمَرْءُ بِلَالٌ وَلَا يَتْبَعُهُ اِلَّا مُؤْمِنٌ، وَهُوَ سَيِّدُ الْمُؤَذِّنِيْنَ

यानी बिलाल एक अच्छा आदमी है, इस की पैरवी सिर्फ़ मोमिन ही करता है और वोह मुअज़्ज़िनों का सरदार है।[19]

**12 अस्सादिकुल बार** ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को इस लक़ब से नवाज़ा गया जो कि उन के सच्चा और नेक होने की मोहर है। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सल्मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ख़ुद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी अज़्वाज से फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मेरे बाद अपनी दौलत से तुम्हारी भरपूर ख़िदमत करेगा वोह अस्सादिकुल बार (सच्चा और नेक) बन्दा है। फिर (येह लक़ब अ़त़ा फ़रमाने के बाद) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ के लिए दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को जन्नत के सलसबील से सैराब फ़रमा।[20]

**13 सैफ़ुल्लाह** मूए मुबारक को अपने सर का ताज बनाने वाले, उ़म्र भर मूए मुबारक की बरकतों से मालामाल होने वाले, दुश्मनाने इस्लाम के ख़िलाफ़ बहादुरी और शुजाअ़त दिखाने वाले जलीलुल क़द्र सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की पाकीज़ा ज़िन्दगी का सब से रौशन बाब जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के ज़ौक़े जिहाद और बहादुराना कारनामों की वजह से "**सैफ़ुल्लाह**" का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया। चुनान्चे तिर्मिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है :

नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते ख़ालिद बिन वलीद के पास से गुज़रे तो हज़रते अबू हुरैरा से पूछा येह कौन है ? हज़रते अबू हुरैरा ने अर्ज़ की : ख़ालिद बिन वलीद हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

نِعْمَ عَبْدُ اللهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ سَيْفٌ مِّنْ سُيُوفِ اللهِ

यानी ख़ालिद बिन वलीद अल्लाह का कितना अच्छा बन्दा है, येह अल्लाह पाक की तल्वारों में से एक तल्वार है।[21]

**14 ज़ुलबिजादैन** येह लक़ब पाने वाले सहाबी वोह हैं कि जब इन को, वालिदा और बिरादरी के लोगों की तरफ़ से सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िरी देने से रोका गया तो उन्हों ने खाना पीना बन्द कर दिया। जब आप की वालिदा को ख़ौफ़ हुवा कि भूक की वजह से इन्तिक़ाल न हो जाए तो आप को जाने की इजाज़त दे दी।[22] आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मदीने पहुंच कर मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ठहर गए, जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के लिए तशरीफ़ लाए और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को देखा तो पूछा : तुम कौन हो ? अर्ज़ की : मेरा नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा है, मैं फ़क़ीर और मुसाफ़िर हूं, आप से महब्बत करता हूं, आप की सोहबत में रहना चाहता हूं, इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा नाम अ़ब्दुल्लाह और तुम्हारा लक़ब ज़ुलबिजादैन है, हमारे घर के क़रीब हमारे पास रहा करो।[23]

**15 सय्यिदुल अन्सार** येह लक़ब हज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का है। येह बारगाहे रिसालत में कातिबे वह्यी थे और येह उन छे सहाबा में से हैं जो अ़हदे नबवी में पूरे हाफ़िज़े क़ुरआन हो चुके थे और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में फ़तवे भी देते थे। सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم इन को सय्यिदुल क़ुर्रा (सब क़ारियों का सरदार) कहते थे। दरबारे नुबुव्वत से इन को सय्यिदुल अन्सार (अन्सार का सरदार) का ख़िताब मिला था।[24]

हज़रते अम्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ईद के दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सय्यिदुल अन्सार को मेरे पास बुलाओ तो लोगों ने जिस हस्ती को बुलाया वोह हज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ही थे।[25]

**16 सफ़ीना** येह लक़ब पाने वाले सहाबी का नाम "**मेहरान**" था इन को रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिला हुवा लक़ब "**सफ़ीना**" ऐसा पसन्द आया कि इन्हों ने इस को अपना नाम ही बना लिया और जब भी इन से इन का अस्ल नाम पूछा जाता तो बताते नहीं थे बल्कि कहते : मेरा नाम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़ीना रखा है। ख़ुद ही बयान करते हैं : मैं एक सफ़र में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था। सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم में से जब कोई थकता अपनी तल्वार, ढाल और तीर मुझे दे देता, यहां तक कि मेरे पास बहुत सा सामान जम्अ़ हो गया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो इरशाद फ़रमाया : तुम सफ़ीना (जहाज़) हो। उस रोज़ अगर मैं एक, दो, तीन, चार, पांच, छे, सात ऊंटों का बोझ भी उठा लेता तो मुझ पर भारी न होता। जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से आप का नाम पूछा जाता तो कहते : मैं बिल्कुल नहीं बताऊंगा, मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा लक़ब सफ़ीना रखा है।[26]

---

(1)التعریفات للجرجانی، ص136 (2)جمع الجوامع، 4/141، حدیث:10814 (3)جمع الجوامع،14/339، حدیث:10905 (4)الریاض النضرۃ،1/77 (5)تاریخ الخلفاء، ص22 (6)اسد الغابہ، 4/162 (7)فیضان فاروق اعظم، 1/53 (8)بخاری، 2/527، حدیث:3689 (9)ریاض النضرۃ، 1/308 (10)ترمذی، 5/390، حدیث:3718 (11)شرف المصطفیٰ لابی سعید الخرکوشی،6/32 (12)بخاری،2/545، حدیث:3744 (13)بخاری، 2/546، حدیث:3745 (14)بخاری، 2/539، حدیث:3719 (15)مسند بزار، 8/278، حدیث:3343 (16)طبقات ابن سعد، 3/188 (17)ابن ماجہ، 1/98، حدیث:146 (18) زرقانی علی المواہب، 4/470 (19)معجم کبیر، 5/209، حدیث:5119 (20)مسند احمد، 10/189، حدیث:26621 (21)ترمذی، 5/456، حدیث:3872 (22)دیکھئے: سیر سلف الصالحین، ص247 (23)مدارج النبوۃ، 2/351 (24)جامع الاصول، 12/186 (25)سیر اعلام النبلاء، 3/247 (26)مسند احمد، 8/215، حدیث:21984-21987

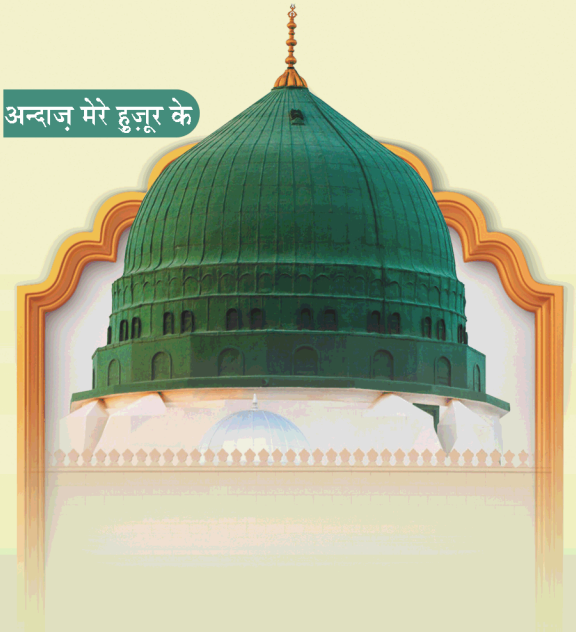

# रसूलुल्लाह ﷺ का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की यूं तो हर अदा हमारे लिए ख़ैर व भलाई वाली है लेकिन आप के अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही की बात ही निराली है जिस से ख़ुद अल्लाह पाक का सच्चा कलाम क़ुरआने पाक हमें मुतआ़रिफ़ (Introduce) करवाता है ताकि हम आप से दिलो जान से महब्बत करें और आप का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही अपना कर अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाएं।

सब से पहले तो हम येह समझते हैं कि अल्लाह पाक ने किस त़रह़ रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही को बयान फ़रमाया है ? चुनान्चे इरशाद होता है : ﴿حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले।[1]

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आयत के इस ह़िस्से की यूं वज़ाह़त फ़रमाते हैं : यानी वोह दुन्या व आख़िरत में तुम्हें भलाइयां पहुंचाने पर ह़रीस हैं।[2]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : ﴿حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ﴾ का माना येह हैं कि कोई तो औलाद के आराम का ह़रीस होता है कोई माल का, कोई इ़ज़्ज़त का, कोई पैसे का, कोई किसी और चीज़ का मगर महबूब عَلَیْہِ السَّلَام न औलाद के, न अपने आराम के, (बल्कि) तुम्हारे ह़रीस हैं इसी लिए विलादते पाक के मौक़अ़ पर हम को याद किया, मेराज में हमारी फ़िक्र रखी, बर वक़्ते वफ़ात हम को याद फ़रमाया, क़ब्र में जब रखा गया तो अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ने देखा कि लबे पाक हिल रहे हैं ग़ौर से सुना तो उम्मत की शफ़ाअ़त हो रही है, रात रात भर जाग कर उम्मत के लिए रो रो कर दुआएं करते हैं कि ख़ुदाया ! अगर तू उन को अ़ज़ाब दे तो येह तेरे बन्दे हैं और अगर उन को बख़्श दे तो तू अ़ज़ीज़ और ह़कीम है। क़ियामत में सब को अपनी अपनी जान की फ़िक्र होगी मगर महबूब عَلَیْہِ السَّلَام को जहान की। सब नबी नफ़्सी नफ़्सी फ़रमाएंगे और महबूब عَلَیْہِ السَّلَام उम्मती उम्मती।[3]

आइए ! हम येह जानने की कोशिश करते हैं कि अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस अन्दाज़ से हमारी ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई है :

## ऐलाने नुबुव्वत से पहले अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एलाने नुबुव्वत से पहले भी लोगों के साथ ख़ैर व भलाई का अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाया, वोह अन्दाज़ किस नोइ़य्यत का था ? इस सिलसिले में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चन्द जुम्ले अन्दाज़े मुस्त़फ़ा को वाज़ेह़ करते हैं चुनान्चे जब पहली वह़ी उतरी तो उस मौक़अ़ पर आप ने ख़ैर ख़्वाही पर मुश्तमिल येह ख़ूबियां बयान फ़रमाईं : बिलाशुबा आप सिलए रह़मी (ख़ूनी रिश्तों से अच्छा सुलूक) फ़रमाते हैं, बोझ उठाते, जो चीज़ नहीं होती वोह अ़त़ा फ़रमाते, मेहमान नवाज़ी करते और राहे ह़क़ में मसाइब बरदाश्त करते हैं।[4]

ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अ़र्ज़ का मत़लब येह है कि "आप रिश्तेदारों पर हर त़रह़ का एह़सान करते हैं बल्कि आप का एह़सान रिश्तेदारों के साथ ख़ास नहीं, हर शख़्स को आ़म है और येही नहीं कि आप सिर्फ़ दाद व दहश करते हैं बल्कि लोगों को उ़म्दा तालीम और अच्छे अख़्लाक़ की तल्क़ीन भी करते हैं।[5] याद रहे कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कमोबेश पन्दरह साल देखे, इस लिह़ाज़ से आप के येह जुम्ले बहुत अहमिय्यत रखते हैं।

## एलाने नुबुव्वत के बाद अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नुबुव्वत का एलान फ़रमाया तो जो लोग आप को सादिक़ो अमीन माना करते थे, आप की जान के

दुश्मन हो गए, बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ें पहुंचाने लगे, एक मौक़अ़ पर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ैर ख़्वाही का अन्दाज़ इस त़रह़ हुवा कि लबे मुस्त़फ़ा पर येह दुआ़ आई : اِغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ यानी ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम (के इस तक्लीफ़ देने के गुनाह) को मुआ़फ़ कर दे येह नहीं जानती ।[6]

जब बारगाहे रिसालत में दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ़ करने की अ़र्ज़ की गई तो आप ने फ़रमाया :

اِنِّیْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا وَّاِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً

यानी मुझे लानत करने वाला बना कर नहीं भेजा गया, मुझे तो रह़मत बना कर भेजा गया है ।[7]

इस अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही का असर एक वाक़िए़ से मुलाह़ज़ा कीजिए चुनान्चे ह़ज़रते सुमामा बिन उसाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ईमान ला कर बाहगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ करने लगे : ख़ुदा की क़सम ! पहले मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप के चेहरे से ज़ियादा ना पसन्द नहीं था लेकिन आज आप का वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा पसन्द है । ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई दीन आप के दीन से ज़ियादा ना पसन्द न था मगर अब आप का वोही दीन मेरे नज़्दीक सब दीनो से ज़ियादा पसन्द है । ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई शहर आप के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ न था लेकिन अब आप का वोही शहर मेरे नज़्दीक तमाम शहरों से ज़ियादा मह़बूब है ।[8]

फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने दुश्मनों को लाया गया तो आप ने उन से पूछा : क्या समझते हो कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा ? अ़र्ज़ की : ऐ करम नवाज़ भाई, ऐ करम नवाज़ भाई के बेटे ! (आप हमारे साथ) भालाई (करेंगे ।) आप ने इरशाद फ़रमाया : जाओ ! तुम आज़ाद हो ।[9]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से ज़िक्र करते, फ़ुज़ूल बात न करते, लम्बी नमाज़ अदा फ़रमाते, ख़ुत्बा मुख़्त़सर देते, बेवाओं और यतीमों के साथ चलने में आ़र मह़सूस न करते यहां तक कि आप उन की ज़रूरत पूरी कर देते ।[10]

रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मत के साथ अन्दाज़े शफ़्क़त की एक झलक मुलाह़ज़ा कीजिए : ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने मुझे तीन सुवाल अ़त़ा फ़रमाए, मैं ने दो बार (तो दुन्या में) अ़र्ज़ कर ली :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِیْ وَاَخَّرْتُ الثَّالِثَةَ لِیَوْمٍ یَرْغَبُ اِلَیَّ الْخَلْقُ كُلُّهُمْ حَتّٰی اِبْرَاهِیْمُ

यानी ऐ अल्लाह ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । और तीसरी अ़र्ज़ उस दिन के लिए उठा रखी जिस में मख़्लूक़े इलाही मेरी त़रफ़ नियाज़ मन्द होगी यहां तक कि (अल्लाह तआ़ला के ख़लील) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام भी मेरे नियाज़ मन्द होंगे ।[11]

येह भी रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक की ख़ैर ख़्वाही ही है कि आप की ब दौलत गुमराहों को हिदायत मिली, मज़्लूम व बेकस को सहारा नसीब हुवा, जिन लोगों के ह़ुक़ूक़ पामाल हो रहे थे उन को अन्दाज़े मुस्त़फ़ा की बरकत से ह़ुक़ूक़ का तह़फ़्फ़ुज़ मिला, आप ने लोगों को बताया कि अल्लाह एक है, दिल में उतर जाने वाले अन्दाज़ के ज़रीए़ ताज़ीमे वालिदैन का दर्स दिया, सिलए रह़मी करना सिखाई, क़त़्ए़ रह़मी से रोका । दिल की बस्ती को रब की याद से आबाद करना सिखाया, वोह तमाम चीज़ें जो हमारी सोच को ख़राब और अ़मल को कमज़ोर करती हैं उन की निशानदही फ़रमाई और इन से छुटकारा पाने का त़रीक़ा भी सिखाया ।

जिन को अल्लाह ने नवाज़ा है उन को ख़र्च करने का त़रीक़ा और ग़रीब व नादार लोगों का एह़सास करने का सलीक़ा सिखाया ताकि येह लोग मुह़्ब्बे फ़ुक़रा व मसाकीन बन जाएं और जिन के पास कुछ नहीं उन को सब्रो शुक्र का सहारा ले कर डटे रहने और जमे रहने का गुर बताया और कस्ब व कोशिश करते रहने की तल्क़ीन फ़रमाई । येह और इस त़रह़ के उमूर का तअ़ल्लुक़ दुन्या से है और वोह उमूर जिन का तअ़ल्लुक़ आख़िरत से है उस में शफ़्क़त व करम नवाज़ी फ़रमाएंगे ।

**इधर उम्मत की ह़सरत पर उधर ख़ालिक़ की रह़मत पर निराला त़ौर होगा गर्दिशे चश्मे शफ़ाअ़त का**

---

(1) پ11، التوبۃ:128 (2) تفسیر کبیر، التوبۃ، تحت الآیۃ:128، 6/178 (3) شانِ حبیب الرحمٰن، ص99-100 (4) بخاری، 1/8، حدیث:3 (5) نزہۃ القاری، 1/251 (6) صحیح ابن حبان، 2/160، حدیث:969 (7) مسلم، ص1074، حدیث:6613 (8) بخاری، 3/131، حدیث:4372 (9) سنن کبریٰ للبیہقی، 9/200، حدیث:18276 (10) نسائی، ص243، حدیث:1411 (11) مسلم، ص318، حدیث:273-

# मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

## 1 रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम का नाम

**सुवाल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम का नाम क्या है ?

**जवाब :** अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम का नाम हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه है।

## 2 सीरते नबी और दीनी किताब पढ़ना

**सुवाल :** क्या नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत की किताब पढ़ना भी इबादत में आएगा ?

**जवाब :** जी हां नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत व शरीअ़त के अहकाम पर मुश्तमिल हर दीनी किताब जो सहीहुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिमे दीन की लिखी हुई हो अच्छी निय्यत से पढ़ने वाले को सवाब मिलेगा।

## 3 बकरी का दूध पीना

**सुवाल :** क्या बकरी का दूध पीना सुन्नत है ?

**जवाब :** जी हां ! बकरी का दूध पीना सुन्नत है, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बकरियों का दूध पीना ब कसरत साबित है बल्कि बकरियां तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर रहती थीं।

## 4 आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के एक शेर की वज़ाहत

**सुवाल :** प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत मक्कए मुकर्रमा में हुई जबकि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने एक शेर में "सुब्ह़ त़यबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का" फ़रमाया है, इस की वज़ाह़त फ़रमा दीजिए।

**जवाब :** आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस शेर का विलादते बा सआ़दत से तअ़ल्लुक़ नहीं है, इस शेर का मत़लब येह है कि जब भी मदीने में सुब्ह़ होती है तो वहां नूर की ख़ैरात बटती है और सारी काइनात में तक़्सीम होती है।

**सुब्ह़ त़यबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का**
**सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का**

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 242)

## 5 दुरूदे पाक की जगह इस्तिग़ासा पढ़ना कैसा ?

**सुवाल :** قَلَّتْ حِيْلَتِیْ اَنْتَ وَسِيْلَتِیْ اَدْرِكْنِیْ يَا رَسُوْلَ اللهِ क्या येह दुरूदे पाक की जगह पढ़ सकते हैं ?

**जवाब :** येह दुरूदे पाक नहीं है, इस को इस्तिग़ासा (यानी फ़रियाद) कहते हैं, येह पढ़ने में ह़रज नहीं है (लेकिन दुरूदे पाक पढ़ने की अपनी फ़ज़ीलत व बरकत है)।

## 6 केलीग्राफ़िक्स डिज़ाइन में दुरूदे पाक लिखना कैसा ?

**सुवाल :** क्या दुरूदे पाक मुख़्तलिफ़ केलीग्राफ़िक्स डिज़ाइन में लिख सकते हैं ?

**जवाब :** मुख़्तलिफ़ रस्मुल ख़त में लिखने का सिलसिला पुराना चला आ रहा है, अगर केलीग्राफ़िक्स डिज़ाइन में दुरूदे पाक के हुरूफ़ वाज़ेह और दुरुस्त लिखे हुए हैं, शॉर्ट फ़ॉर्म नहीं है तो केलीग्राफ़िक्स डिज़ाइन में दुरूदे पाक लिखना जाइज़ है। अगर शॉर्ट फ़ॉर्म में लिखा है तो येह जाइज़ नहीं है, जैसे صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जगह "ص" या "صلعم" लिखना ना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, 1/534)

## 7 दाढ़ी कब रखना ज़रूरी है ?

**सुवाल :** क्या 40 साल के बाद दाढ़ी रखना ज़रूरी हो जाता है ?

**जवाब :** जैसे ही लड़का बालिग़ हुवा तो अब उस पर शरीअ़त के अह़काम लागू हो जाते हैं, इस्लामी सिन के ह़िसाब से लड़का 12 से 15 साल और लड़की 9 से 15 साल के दरमियान अ़लामात ज़ाहिर होने के ज़रीए बालिग़ होते हैं, अगर अ़लामात ज़ाहिर न हों तो फिर जिस दिन हिजरी सिन के एतिबार से लड़का या लड़की 15 साल के होंगे तो उस दिन से वोह बालिग़ शुमार होंगे ? जब लड़का बालिग़ हुवा और दाढ़ी निकल आई तो अब उस को दाढ़ी रखना वाजिब है। 40 साल उ़म्र होने का इन्तिज़ार नहीं करेंगे। (बहारे शरीअ़त, 3/203)

## 8 दाढ़ी से खेलने का हुक्म

**सुवाल :** दाढ़ी से खेलना कैसा और इस के नुक़्सानात क्या हैं ?

**जवाब :** नमाज़ में दाढ़ी या कपड़े या बदन से खेलना मकरूहे तह़रीमी है और मकरूहे तह़रीमी ना जाइज़ो गुनाह होता है। (बहारे शरीअ़त, 1/283-624) बाज़ लोग नमाज़ के इ़लावा भी दाढ़ी से खेलते रहते हैं कभी दाढ़ी के बाल मुंह में लेते हैं, कभी दाढ़ी के बाल हाथ से मसलते घुमाते रहते हैं जिस की वजह से दाढ़ी के बाल कमज़ोर हो जाते हैं और टूट कर गिरते हैं जो कि एक फ़ुज़ूल ह़रकत है, इस से बचना चाहिए कि इस्लाम का हुस्न येह है कि इन्सान ला यानी (फ़ुज़ूल) कामों से बचे। अगर दाढ़ी के बाल मुंह में लिए और दांतों से कट कर एक मुठ्ठी से कम हो जाएं तो गुनाहगार होगा क्यूंकि बाल किसी क़ैंची वग़ैरा से कांटें या दांतों से, कांटना ही कहलाएगा।

## 9 किसी के पास किसी दूसरे के ज़ाइद पैसे आ जाएं तो क्या करें ?

**सुवाल :** मैं मद्रसतुल मदीना से रिक्शे में आ रहा था तो रिक्शे वाले को मैं ने किराया काटने के लिए 500 रुपिये दिए, उस ने किराया काट कर मुझे पैसे वापस दिए और मैं ने रख लिए, बाद में मैं ने देखा तो रिक्शे वाले की त़रफ़ से मेरे पास 30 रुपिये ज़ाइद आ गए थे, अब वोह रिक्शे वाला मुझे मिल नहीं रहा है लिहाज़ा मैं उन 30 रुपियों का क्या करूं ?

**जवाब :** अगर वाक़ेई उस रिक्शे वाले के मिलने की कोई सूरत नहीं है तो आप येह 30 रुपिये किसी शरई फ़क़ीर यानी जिस को ज़कात दे सकते हैं उस को ख़ैरात दे दें, अगर बाद में वोह रिक्शे वाला आप को मिल जाता है और आप उस को बता देते हैं कि आप की त़रफ़ से मेरे पास 30 रुपिये ज़ाइद आ गए थे वोह मैं ने आप की त़रफ़ से ख़ैरात कर दिए हैं और वोह कहता है ठीक है कोई बात नहीं तो आप बरी हो जाएंगे, अगर वोह कहता है कि नहीं मुझे 30 रुपिये चाहिएं तो अब आप को उसे देने पड़ेंगे।

(1) या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी सारी तदबीरें ख़त्म होती जा रही हैं, आप ही मेरा वसीला हैं, मुझे संभालिए।

# दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

## 1 मुक़्तदी ने भूल कर इमाम से पहले सलाम फेर दिया तो ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि जमाअ़त में शुरूअ़ से शामिल मुक़्तदी अगर भूले से इमाम के सलाम फेरने से पहले ही एक त़रफ़ सलाम फेरे, फिर याद आने पर फ़ौरन लौट आए और इमाम के साथ सलाम फेर कर नमाज़ मुकम्मल करे, तो इस सूरत में उस की नमाज़ का क्या हुक्म होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में उस मुक़्तदी की वोह नमाज़ दुरुस्त अदा हुई है, उसे दोहरने की कोई ह़ाजत नहीं न ही मुक़्तदी पर सज्दए सहव लाज़िम हुवा।

बयान कर्दा हुक्म की एक नज़ीर येह है कि मस्बूक़ मुक़्तदी अगर भूले से इमाम से पहले ही सलाम फेर ले तो इस सूरत में न तो उस मस्बूक़ मुक़्तदी की नमाज़ फ़ासिद होती है और न ही उस पर सज्दए सहव लाज़िम होता है कि इमाम के सलाम फेरने से पहले वोह मुक़्तदी है, उस से येह ग़लत़ी ह़ालते इक़्तिदा में वाक़ेअ़ हुई है और मुक़्तदी का सहव मोतबर नहीं।

बिल फ़र्ज़ अगर वोह मुक़्तदी पूछी गई सूरत में क़सदन इमाम से पहले ही सलाम फेर कर नमाज़ मुकम्मल कर लेता तो इस सूरत में उस मुक़्तदी की वोह नमाज़ मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होती कि मुक़्तदी पर तमाम फ़राइज़ो वाजिबात में इमाम की इत्तिबाअ़ व पैरवी वाजिब है और बिला ज़रूरते शरइय्या इस वाजिब का तर्क मकरूहे तह़रीमी, नाजाइज़ व गुनाह है। अब जबकि सूरते मसऊला में मुक़्तदी ने सहवन इमाम से पहले सलाम फेरा लेकिन फिर नमाज़ में लौट कर इमाम की इत्तिबाअ़ में भी सलाम फेर कर अपनी उस नमाज़ को मुकम्मल किया तो यहां इमाम की मुताबअ़त पाई जाने की वजह से उस मुक़्तदी की नमाज़ बिग़ैर किसी कराहत के दुरुस्त अदा हुई है।

(ردالمحتار مع الدر المختار، 2/202-بہارِ شریعت، 1/519-البحر الرائق شرح کنزالدقائق، 1/401-فتاوٰی رضویہ، 7/274، 275ملتقطاً)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 चलते फिरते क़ुरआने करीम की तिलावत करना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मन्ज़िल दोहराने के लिए या वैसे ही तिलावते कलामे पाक करता हूं, बैठे बैठे तिलावत करने में सुस्ती आ जाती है, तो खड़े हो कर चलते चलते तिलावत करता हूं, मालूम येह करना है कि मैं चलते हुए तिलावते कलामे पाक कर सकता हूं या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

चलते हुए तिलावत करना जाइज़ है जबकि चलने की वजह से दिल तिलावत के इ़लावा किसी और त़रफ़ मशग़ूल न होता है, अगर चलने की वजह से तवज्जोह बटती हो या दिल तिलावत के इ़लावा किसी और त़रफ़ मशग़ूल हो रहा हो, तो इस सूरत में चलते हुए तिलावत करना मकरूह व ना पसन्दीदा अ़मल है।

(बहारे शरीअ़त, 1/551)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 दौराने त़वाफ़ याददाश्त के लिए धात का छल्ला पहनना

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि त़वाफ़ के लिए एक क़िस्म की धात का छल्ला मिलता है जिस के साथ दानों वाली तस्बीह़

लटक रही होती है उसे याददाश्त के लिए उंगली में डालते हैं और फिर हर चक्कर पर एक दाना शुमार करते जाते हैं। शरई रहनुमाई फ़रमाएं कि इस त़रह़ का छल्ला उंगली में डालना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ? और जो छल्ला पहनना गुनाह है येह उस में शुमार होगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

तांबा और पीतल में सिर्फ़ तह़ल्ली (यानी ज़ेवर के त़ौर पर पहनना) ह़राम है और तह़ल्ली ज़ेवर के साथ होती है और ज़ेवर वोह चीज़ होती है जिस से ज़ीनत ह़ासिल की जाती है और तस्बीह़ात वग़ैरा को पकड़ने के लिए जो छल्ला उन के साथ लगा होता है येह ज़ेवर की त़र्ज़ पर नहीं बना होता और इस त़रह़ का नहीं होता कि उस से ज़ीनत ह़ासिल की जाए और उस को उंगली में ज़ेवर और ज़ीनत के त़ौर पर डाला भी नहीं जाता बस ह़िफ़ाज़त के लिए उंगली में अटका लिया जाता है। पस उसे ह़िफ़ाज़त के लिए उंगली में अटका लेना जाइज़ है।

जुज़इय्यात से साबित है कि ज़ेवर वोह है जिस से तज़य्युन (यानी ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करना) मक़्सूद होता है और तस्बीह़ात वग़ैरा अश्या के साथ जो छल्ला होता है उस से तज़य्युन मक़्सूद नहीं होता लिहाज़ा येह ज़ेवर में शुमार नहीं होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 4 कम्पास वाली जाए नमाज़ पर नमाज़ पढ़ने का ह़ुक्म

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरे चचा उ़मरह से वापस आए और वोह एक जाए नमाज़ ले कर आए जो उन्हों ने मुझे तोह़फ़े में दी है। उस जाए नमाज़ के दरमियान में क़िब्ले की सम्त दिखाने वाला कम्पास नस्ब है, नमाज़ अदा करते हुए उस पर नज़र भी पड़ती है, क्या उस जाए नमाज़ पर नमाज़ पढ़ सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में कामयाब मोमिनीन की सिफ़ात बयान करते हुए एक सिफ़त येह बयान फ़रमाई कि वोह नमाज़ पढ़ते हुए अपनी नमाज़ों में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्तियार करते हैं, इस के पेशे नज़र हर मुसलमान को अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्तियार करना चाहिए, ज़ाहिरी आज़ा में ख़ुशूअ़ का माना येह है कि नमाज़ी के तमाम आज़ा सुकून में हों और नज़र क़ियाम की ह़ालत में मक़ामे सजदा पर, ह़ालते रुकूअ़ में पुश्ते क़दम पर, ह़ालते सुजूद में नाक की त़रफ़ और ह़ालते क़ादा में अपनी गोद की त़रफ़ हो। अब अगर ऐसे मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ी जाएगी जिस पर क़िब्ले की सम्त दिखाने वाला कम्पास नस्ब है, तो इस सूरत में ख़ाशेईन की त़रह़ नमाज़ पढ़ते हुए क़ियाम, रुकूअ़ और कुऊ़द की ह़ालत में बार बार नज़र उस कम्पास की त़रफ़ उठेगी, तवज्जोह उसी त़रफ़ मब्ज़ूल होती रहेगी, जिस की वजह से ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ में ख़लल वाक़ेअ़ होगा, लिहाज़ा ऐसे मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ना मकरूहे तन्ज़ीही होगा यानी ऐसे मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ना अगर्चे गुनाह नहीं है, लेकिन उस पर नमाज़ पढ़ने से बचना चाहिए।

(مراقی الفلاح شرح نور الایضاح، ص273۔وقار الفتاوی، 2/514)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# काम की बातें

1 यक़ीन, एतिमाद और उम्मीद येह हमारी ज़िन्दगी के ऐसे सुतून (Pillars) हैं कि अगर यक़ीन ख़त्म हो जाए, एतिमाद टूट जाए और उम्मीद ख़त्म हो जाए तो इन्सान की ज़िन्दगी उजड़ जाती है।

2 अगर आप नेमतों को बढ़ाना चाहते हैं तो जब भी घर के बारे में, बच्चों के बारे में कोई ख़ुशी मिले तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ लीजिए या बा वुज़ू क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के सजदए शुक्र अदा कर लीजिए, मेरा यक़ीन है कि अगर आप ने येह आ़दत बना ली तो नेमतें आप की त़रफ़ तेज़ी से आना शुरूअ़ हो जाएंगी।

3 वालिद को चाहिए कि औलाद के दरमियान बराबरी (Equality) का मुआ़मला करे मगर जब सब के लिए कोई चीज़ लाए तो बांटने में बेटियों से पहल करे कि बेटियों का दिल छोटा होता है, बाप अगर उन से पहल करेगा तो वोह ख़ुश हो जाएंगी और उस वक़्त भाइयों को भी बुरा नहीं लगना चाहिए बल्कि उन को तो हमेशा अपनी बहनों का ख़याल रखना चाहिए और बहनों को भी चाहिए कि उन के ख़याल रखने का नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाएं।

4 अगर आप के पास कोई परेशान ह़ाल उदासी और मायूसी की कैफ़िय्यत में आए तो आप उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई कीजिए उसे परेशानी या मुसीबत से निकलने की उम्मीद दिलाएं और उसे मायूसी के अन्धेरे से निकालने की कोशिश कीजिए क्यूंकि वोह अभी मायूसी के अन्धेरे में खोया हुवा है और उसे आप की ह़ौसला अफ़्ज़ाई की रौशनी चाहिए, अल्लाह ने चाहा तो आप की दिल जोई और हिम्मत दिलाने से वोह ख़ुद कुशी से बच जाएगा।

5 कोई मुश्किल काम करना हो तो अपने दिमाग़ में येह बात बिठा लें कि "अगर कोई मुश्किल काम कर सकता है तो मैं भी कर सकता हूं।"

6 बे तवज्जोही से मुत़ालआ़ करना फ़ाइदा नहीं देता, अगर कभी मुत़ालए़ के दौरान कहीं सोचों में गुम हो जाएं तो जब दोबारा ज़ेहन किताब की त़रफ़ आए तो जहां से तवज्जोह हटी थी उसी जगह से दोबारा पढ़ना शुरूअ़ कीजिए।

7 मुत़ालआ़ करते वक़्त येह ज़ेहन होना चाहिए कि दोबारा येह किताब पढ़ने का मौक़अ़ नहीं मिलेगा और

तवज्जोह ऐसी हो कि जब किताब बन्द करें और कोई उस किताब के बारे में आप से सुवाल करे तो आप उसे बता सकें।

8 मुस्बत सोच (Positive thinking) आप को पुर सुकून रखती है और मन्फ़ी सोच (Negative thinking) आप को बेचैन करती है, अगर आप सुकून चाहते हैं तो अपनी सोच को मुस्बत बनाइए।

9 (Take an umbrella before it rains) (छतरी बारिश से पहले ले लिया करो) इस अंग्रेज़ी मुहावरे में एक सबक़ है कि मुश्किलात आने से पहले ही मुम्किना हल तलाश रखना चाहिए, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मोहतात आदमी सदा सुखी रहता है।" (रौशनी (EP 01))

10 किसी भी मुआमले में मुशावरत (Counseling) का फ़ाइदा येह होता है कि सब की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ राय आती हैं और फिर सारे मशवरों को मिला कर कोई एक अच्छा मशवरा तख़्लीक़ पाता है या बाज़ औक़ात किसी एक की राय ही ऐसी होती है जो सब को पसन्द आ जाती है।

11 महंगाई को रोकने के लिए मुआशी माहिरीन येह तरीक़ा बताते हैं कि जब कोई चीज़ महंगी हो जाए और आप उसे सस्ती करना चाहते हैं तो उस चीज़ को ख़रीदना छोड़ दें वोह चीज़ सस्ती हो जाएगी, क्यूंकि जब कोई नहीं ख़रीदेगा तो बेचने वाले को मजबूरन सस्ती ही बेचनी पड़ेगी, जैसे फ़्रूट की मिसाल ले लें कि सुब्ह के वक़्त फ़्रूट के दाम महंगे होते हैं लेकिन शाम को जब लोग घरों को जा रहे होते हैं तो फ़्रूट वाले अपने रेट नीचे ले आते हैं क्यूंकि उन्हें पता होता है कि अगर मैं बचा कर ले जाऊंगा तो मेरा फ़्रूट ज़ाएअ हो जाएगा।

12 अपने बजट को कन्ट्रोल करने के लिए ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को अपनी ज़रूरत न बनाएं और खाने पीने में अपने नफ़्स को किसी चीज़ का आदी न बनाएं बल्कि मोतदिल रहें और मियाना रवी इख़्तियार करें नीज़ बचत और किफ़ायत शिआरी का ज़ेहन बनाएं, अपने घर और किचन वग़ैरा का सर्वे करें और ग़ौरो फ़िक्र करें की जो चीज़ें ग़ैर ज़रूरी हैं उन से रुक जाएं।

13 कामयाब ताजिर वोह है जिस को ख़रीदना आता है, जितनी कम क़ीमत में चीज़ ख़रीदेगा नफ़्अ उस का अपना होगा, महंगा ख़रीदेगा तो फंस जाएगा।

14 माल में बरकत का तरीक़ा येह है कि अल्लाह की राह में सदक़ा करें सदक़ा देने से माल बढ़ता है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़सम खा कर इरशाद फ़रमाया कि सदक़ा देने से माल कम नहीं होता। (ترمذی، 145/4، حدیث:2332) मैं ने ग़रीब या मुतवस्सित फ़ैमेलीज़ को भी येह ज़ेहन दिया है कि अपनी जेब से निकाल कर अल्लाह की राह में कुछ दें, चाहे एक ही रुपिया हो, मुट्ठी भर चावल हों या एक खजूर ही हो, फिर देखें अल्लाह पाक उस के बदले कितना अता फ़रमाता है।

15 अगर आप ख़ुश रहना चाहते हैं तो दूसरों को ख़ुश रखना सीखें।

अल्लाह पाक हमें इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم


आज ही अपने क़रीबी मक्तबतुल मदीना से ख़रीद कर पढ़िए।

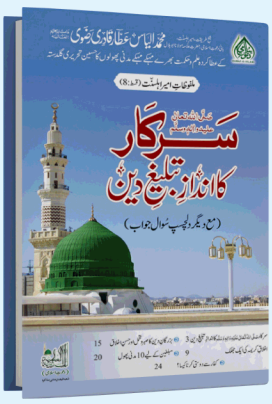

कुछ नेकियां कमा ले

( दूसरी और आख़िरी क़िस्त )

# सायए अ़र्श दिलाने वाली नेकियां

## आंखों की हिफ़ाज़त करना, सूद व रिश्वत से बचना

हज़रते उम्मे दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मौक़ूफ़न रिवायत है कि हज़रते मूसा बिन इमरान عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! हज़ीरतुल क़ुद्स (यानी जन्नत) में कौन रहेगा और उस दिन कौन तेरे अ़र्श के साए में होगा जिस दिन तेरे (अ़र्श के) साए के इलावा कोई साया न होगा ? अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! येह वोह लोग हैं जिन की आंखें कभी ज़िना की तरफ़ नहीं उठतीं और जो अपने माल में सूद के तलबगार नहीं होते और वोह अपने फ़ैस्लों पर रिश्वत नहीं लेते, येही वोह लोग हैं जिन के लिए ख़ुशख़बरी और अच्छा ठिकाना है ।[1]

मालूम हुवा कि बारगाहे इलाही में येह मत़लूब है कि हम अपने आज़ा को भी उस की इत़ाअ़त का पाबन्द रखते हुए ह़राम से बचाएं और अपने माल को भी सूद व रिश्वत जैसे ह़राम ज़राएअ़ से दूर रखें ।

## भूक इख़्तियार करना

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या में भूके रहने वाले लोगों की अरवाह़ को अल्लाह पाक क़ब्ज़ फ़रमाता है और उन का ह़ाल येह होता है कि अगर ग़ाइब हो जाएं तो उन्हें तलाश नहीं किया जाता, अगर मौजूद हों तो पहचाने नहीं जाते, दुन्या में पोशीदा होते हैं मगर आस्मानों में उन की शोहरत होती है, जब जाहिल व बे इ़ल्म शख़्स उन्हें देखता है तो उन को बीमार गुमान करता है जबकि वोह बीमार नहीं होते बल्कि उन्हें अल्लाह पाक का ख़ौफ़ दामनगीर होता है, क़ियामत के दिन येह लोग अ़र्श के साए में होंगे जिस दिन उस के इलावा कोई साया न होगा ।[2]

इस रिवायत से मालूम हुवा कि ग़रीब व सादा लौह़ लोगों को ह़क़ीर और ग़ैर अहम नहीं समझना चाहिए और न ही किसी की ग़ुर्बत व सादगी का मज़ाक़ उड़ाना चाहिए क्या ख़बर कि बारगाहे ख़ुदा में उन का क्या मक़ाम हो, नीज़ अगर हम पर कभी ग़ुर्बत व फ़ाक़ा के ह़ालात आन पड़ें तो उसे रब की त़रफ़ से इम्तिह़ान समझ कर सब्र करना चाहिए क्या मालूम कि उस आज़माइश में साबित क़दमी ही की वजह से रोज़े क़ियामत अ़र्श का साया अ़त़ा कर दिया जाए ।

## सब से पहले सायए अ़र्श मिलने की बिशारत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो क़ियामत के दिन सब से पहले किन लोगों को अ़र्श का साया नसीब होगा ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : اَللّٰہُ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ यानी अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं । इरशाद फ़रमाया : वोह

लोग जिन के सामने हक़ पेश किया जाता है तो उस को क़बूल करते हैं, जब उन से सुवाल किया जाता है तो अ़ता करते हैं और लोगों के हक़ में फ़ैस्ले इस त़रह़ करते हैं जैसा अपने हक़ में फ़ैस्ला करते हैं।(3)

## आ़दिल व मुन्क़सिरुल मिज़ाज बादशाह को नसीह़त करना

नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़दलो इन्साफ़ और आ़जिज़ी करने वाला बादशाह ज़मीन पर अल्लाह पाक (की रह़मत) का साया और उस का नेज़ा है पस जिस ने बादशाह को अपने और अल्लाह पाक के बन्दों के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त की (यानी फ़ाइदा मन्द बात बताई) अल्लाह पाक उस का ह़श्र अपने सायए रह़मत में फ़रमाएगा जिस दिन उस के सायए रह़मत के इ़लावा कोई साया न होगा।(4)

## बादशाह का इन्साफ़ करना

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : इन्साफ़ करने वाले बादशाह बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक के क़ुर्ब में अ़र्श के दाईं जानिब नूर के मिम्बरों पर होंगे और येह वोह होंगे जो अपनी रिआ़या और अहलो इ़याल के दरमियान फ़ैस्ला करते वक़्त अ़दलो इन्साफ़ से काम लेते थे।(5)

## ज़बान और दिल से रब का ज़िक्र करना

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! जो अपनी ज़बान और दिल से तेरा ज़िक्र करे उस के लिए क्या जज़ा है ? अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : मैं क़ियामत के दिन उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाऊंगा और उसे अपनी रह़मत में रखूंगा।(6)

## मुसलमानों पर सख़्ती न करना बल्कि नर्मी से पेश आना

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : जिसे येह पसन्द हो कि अल्लाह पाक उसे जहन्नम की गर्मी से बचाए और अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाए तो वोह मुसलमानों पर सख़्ती न करे और उन के साथ नर्मी से पेश आए।(7)

## अ़र्श के साए में दस्तर ख़्वान

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : रोज़े दारों के मुंह से मुश्क की ख़ुश्बू आएगी, बरोज़े क़ियामत उन के लिए अ़र्श के साए में दस्तर ख़्वान लगाया जाएगा तो वोह उस से खाएंगे जबकि दूसरे लोग सख़्ती में होंगे।(8)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि रोज़े दारों के लिए अ़र्श के नीचे हीरे जवाहिरात से मुरस्सअ़ सोने का दस्तर ख़्वान बिछाया जाएगा, उस पर जन्नत के अन्वाअ़ व अक़्साम के खाने, मशरूबात और फल होंगे, पस रोज़े दार खाएंगे और पिएंगे और लज़्ज़त ह़ासिल करेंगे जबकि लोग ह़िसाब की सख़्ती में होंगे।(9)

मोह़तरम क़ारिईन ! हर मुसलमान की दिली तमन्ना होती है कि वोह दीनो दुन्या की भलाइयां समेट ले और क़ब्रो ह़श्र की सख़्तियों से महफ़ूज़ हो जाए, क़ियामत की हौलनाकियों से छुटकारा पा कर अ़र्शे इलाही का साया ह़ासिल करने में कामयाब हो जाए। क्या आप भी येह ही चाहते हैं ? यक़ीनन चाहते होंगे ! तो आइए ! बयान की गई अह़ादीस पर अ़मल करते हुए ❁ किसी भी मुआ़मले का फ़ैस्ला करते वक़्त अ़दलो इन्साफ़ का दामन हरगिज़ न छोडिए और वोह फ़ैस्ला कीजिए जो हक़ और सच हो ❁ ज़िक्रुल्लाह की कसरत कीजिए, ❁ मुसलमानों के साथ नर्मी वाला बरताव कीजिए, ❁ फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़े रखने की सआ़दत भी पाइए। अल्लाह पाक की रह़मत से क़ियामत के दिन अ़र्श का साया नसीब होगा।

---

(1)شعب الایمان، 4/392، حدیث:5513 (2)مسند فردوس الاخبار، 1/409، حدیث:1654 (3)مسند احمد، 9/336، حدیث:24433 (4)فضیلۃ العادلین لابی نعیم اصبہانی، ص124، حدیث:18 (5)مسلم، ص783، حدیث:4721 (6)حلیۃ الاولیاء، 4/48، حدیث:4705 (7)کنز العمال، جز:3، 2/69، حدیث: 5982 (8)موسوعۃ امام ابن ابی دنیا، 4/102، حدیث:139 (9)فردوس الاخبار، 5/490، حدیث:8853۔

# हमागीर इन्क़िलाब

इन्सान ज़िन्दगी में अपनी ख़ुदाद सलाहिय्यत, इल्मी क़ाबिलिय्यत, हुस्ने आ़दत और दीनी ख़िदमत की बदौलत लोगों के दिलों में अपनी क़द्रो अ़ज़मत पैदा करता है। रईसुत्तहरीर, मोहसिने अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शख़्सिय्यत भी इन्ही ख़ूबी व कमाल की जामेअ़ थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने न सिर्फ़ ज़बान व बयान के ज़रीए मस्लके हक़ अहले सुन्नत की तरवीजो इशाअ़त फ़रमाई बल्कि क़िरतास व क़लम के ज़रीए भी लोगों के अ़क़ाइदो आमाल की इस्लाह़ फ़रमाई और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत व तालीमात को आ़म फ़रमाया। 39 साल क़ब्ल 1985 ईसवी के सितम्बर में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका के बारे में एक कोलम लिखा था, उस कोलम की अहमिय्यत व इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र इसे "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के क़ारेईन के लिए पेश किया जा रहा है।[1]

एक सदी नहीं, आधी सदी नहीं, चौथाई सदी से भी कम सिर्फ़ 23 साल की मुद्दत में रूए ज़मीन पर इतना बड़ा रूहानी और मज़हबी इन्क़िलाब बरपा हुवा कि आज तक उस की बरकतें आस्मान के बादल की त़रह़ बरस रही हैं, सूरज की रौशनी की त़रह़ चमक रही हैं और हमेशा ताज़ा रहने वाले फूलों की त़रह़ महक रही हैं।

ऐसा इन्क़िलाब जिस ने ज़मीन का जुग़्राफ़िय्या बदल दिया, रियासतों के नक़्शे बदल दिए, क़ौमों का ज़ेह्न

नोट : चन्द मक़ामात पर मुश्किल ताबीरात को आसान किया गया है। मजलिसे माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

बदल दिया, अख़्लाक़ के मेयारात बदल दिए, मज्दो शर्फ़ इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी का मेयार बदल दिया, फ़िक्र के ज़ाविये बदल दिए, दिलों के तक़ाज़े बदल दिए, त़बीअ़तें बदल दीं, मुआ़शरे का ढांचा बदल दिया, ज़िन्दगी के क़ाफ़िलों की सिम्तें बदल दीं, लज़्ज़तो मसर्रत और तक्लीफ़ो आराम के एह़सासात बदल दिए, यहां तक कि सदियों के बिगड़े हुए इन्सानों को ऐसा बदल दिया कि वोह अपने ज़ाहिर से भी बदल गए और बात़िन से भी, वोह अपने अन्दर से भी बदल गए और बाहर से भी, बल्कि बदलने वाले इस शान से बदले कि जिसे देख लिया, वोह भी बदल गया।

और इन्क़िलाब की गहराई में उतरिए तो इतना हमागीर (हर चीज़ पर या हर सिम्त छाया हुवा) और रंगा रंग इन्क़िलाब के बयक वक़्त इसे मज़हबी इन्क़िलाब भी कहिए और ज़रई इन्क़िलाब भी, इसे इल्मो फ़िक्र का इन्क़िलाब भी कहिए और आईनो दस्तूर का इन्क़िलाब भी, इसे तमद्दुनी व तहज़ीबी इन्क़िलाब भी कहिए और इन्फ़िरादी व इज्तिमाई इन्क़िलाब भी, इसे अ़लाक़ाई इन्क़िलाब भी कहिए और आ़लमी इन्क़िलाब भी।

ऐसा इन्क़िलाब जो ह़याते इन्सानी के हर शोबे पर ह़ावी, तन्हा एक इन्सान की ज़ात से क्यूं कर वुजूद में आ गया ?

इतना अ़ज़ीम इन्क़िलाब, जो दुन्यवी ज़िन्दगी की कामरानी का भी ज़ामिन हुवा और उख़रवी नजात का भी परवाना अ़त़ा करता हो, एक ऐसे अकेले और तन्हा हाथ से क्यूं कर अन्जाम पाया, जिस का ख़ुदा के सिवा इस दुन्या में न कोई मुअ़ल्लिम था, न मुरब्बी, न कोई मुह़ाफ़िज़ था, न निगेहबान, सारा ख़ानदान जिस से शाकी हो, जिस का क़बीला इस से मुन्ह़रिफ़, सारा मक्का जिस के ख़ून का प्यासा और सारा अ़रब जिस का दुश्मन ?

अस्बाब व इलल की बुन्याद पर वाक़िआ़त को जांचने वाली अ़क़्ल क्या इस गुत्थी को सुल्झा सकती है कि वोह अ़रब जो सदियों से कुफ़्रो शिर्क, फ़वाहिश व मुन्किरात और त़रह़ त़रह़ की वह़शत व दरिन्दगी में डूबा हुवा था, वोह पलक झपकते ही अन्दर से बाहर तक क्यूं कर बदल गया ?

अख़्लाक़ी बुराइयों से किसी फ़र्द या जमाअ़त का ताइब हो जाना कोई ह़ैरत अंगेज़ बात नहीं है। इस त़रह़ के वाक़िआ़त आए दिन पेश आते रहते हैं, लेकिन येह बात मोजिज़ा की ह़द तक ज़रूर ह़ैरत अंगेज़ है कि मुल्क का मुल्क अपना आबाई मज़हब बदल ले और तब्दीली का रद्दे अ़मल भी ऐसे जज़्बे के साथ हो कि पुराने दीन का एक एक निशान जब तक पूरी त़रह़ मिट नहीं गया, दिलों को क़रार के लम्ह़ात मयस्सर न आए।

और क्या इन्सानी तारीख़ में इस वाक़िए़ की और कोई मिसाल मिल सकती है कि एक मासूम पैग़म्बर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) लगातार तेरह साल तक कुफ़्फ़ारे मक्का के लर्ज़ा ख़ेज़ मज़ालिम का सामना करता है, यहां तक कि एक दिन तंग आ कर वोह मदीने की त़रफ़ हिजरत कर जाता है। और अभी आठ साल भी नहीं गुज़रने पाए थे कि वोही पैग़म्बर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) एक दिन बारह हज़ार का लश्करे जर्रार लिए हुए अ़ज़ीम फ़ातेह़ की हैसिय्यत से मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो जाता है लेकिन अन्दाज़ ऐसा आ़जिज़ी वाला होता है कि ज़माना ह़ैरान है।

अ़क़्ल कहती है कि येह तल्वारों का बरपा किया हुवा इन्क़िलाब हरगिज़ नहीं हो सकता, येह फ़िक्रो ज़ेह्न का इन्क़िलाब था। फिर देखने वालों ने येह भी देखा कि फ़त्ह़े मक्का के बाद सारे जज़ीरए अ़रब से फ़र्ज़ी ख़ुदाओं का जनाज़ा इस धूम धाम से उठा कि तल्वार उठाना तो बड़ी बात है, कोई आंसू बहाने वाला भी न था।

और इस के बाद इस्लाम का येह सैलाब ज़मीन के तूलो अ़रज़ में इस तेज़ी के साथ फैलता गया कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन के अ़ह्दे मैमून में इस्लामी इक़्तिदार का सूरज ख़त्ते निस्फ़ुन्नहार पर जगमगाने लगा। और अभी एक सदी भी गुज़रने नहीं पाई थी कि इस की धूप ऐशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा के सह्राओं, पहाड़ों और रेगज़ारों, नीज़ सारे बह्रो बर और ख़ुश्को तर पर पड़ने लगी।

दिलों को पिघला देने वाली, फ़िक्र को जगा देने वाली और अ़क़्ल को लर्ज़ा देने वाली येही वोह मन्ज़िल है, जहां हम अपने क़लम रोक कर दुन्या के दानिशवरों के सामने एक सुवाल रखना चाहते हैं। वोह सन्जीदगी के साथ ग़ौर फ़रमाएं कि क्या दुन्या में इस से पहले भी इस त़रह़ का कोई रूह़ानी, अख़्लाक़ी और सियासी इन्क़िलाब इन्हों ने दखा है ?

ताक़त के ज़रीए ज़मीनों, आबादियों और मुल्कों पर क़ब्ज़ा करने वाले एक से एक बादशाह हम ने देखे हैं, लेकिन तारीख़ में एक भी ऐसा फ़ातेह हमारी नज़र से नहीं गुज़रा, जिस ने आबादियों पर क़ब्ज़ा करने से पहले दिलों की सर ज़मीन फ़त्ह कर ली हो, जिस ने क़ल्ओं की फ़सीलों और बुर्जों पर अपना झन्डा गाड़ने से पहले दिलों की सर ज़मीन पर अपना झन्डा नस्ब कर दिया हो।

जो लोग येह कहते हैं कि इस्लाम तल्वार की ताक़त से फैला है, उन्हें अपना दावा साबित करने के लिए मक्कए मुकर्रमा में आना चाहिए। वहां तल्वार पैग़म्बर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हाथ में नहीं थी, कुफ़्फ़ारे मक्का के हाथों में थी। इस में कोई शक नहीं कि वहां तल्वारें भी चलीं, तीर भी बरसे और ताक़त भी इस्तिमाल में लाई गई, लेकिन इस्लाम को फैलाने के लिए नहीं, बल्कि इस्लाम की पेश क़दमी को रोकने वाले सफ़्फ़ाक दरिन्दों की तल्वारों की ज़र्ब से लोग ज़ख़्मी होते रहे, क़ैदो बन्द की आज़माइशों में सुलगते रहे, लेकिन कलिमए हक़ के साथ वालिहाना अक़ीदत का नशा था कि उतरने के बजाए और चढ़ता ही रहा।

रिसालते मुहम्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तारीख़ का मुतालआ करते वक़्त इन्सानी फ़ितरत का येह तक़ाज़ा अगर नज़र में रखा जाए, तो इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत के एहसास में इज़ाफ़ा हो जाएगा और वोह येह कि आदमी दिल की रग़बत के साथ वहीं क़दम रखता है, जहां कोई ख़तरा न हो, या जहां आराम और मन्फ़अत की कोई उम्मीद हो। सब जानते हैं कि मक्का में आसाइश व मन्फ़अत के सारे वसाइल क़ुरैश और कुफ़्फ़ारे मक्का के हाथों में थे। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़रीब आने वालों की माद्दी आसाइशो मन्फ़अत की कोई तवक़्क़ोअ न थी। लोग दिन रात अपनी आंखों से येह तमाशा देखते थे कि जिस ने भी रसूल का कलिमा पढ़ा, उस का जीना दोभर हो गया और मक्का की पूरी आबादी दरपै आज़ार हो गई।

अब अहले अक़्लो दानिश ही फ़ैसला करें कि इन हालात में फ़ितरते इन्सानी का तक़ाज़ा क्या होना चाहिए ? क्यूं ऐसा नहीं हुवा कि लोग कलिमा पढ़ने वालों का हश्र देख कर इब्रत पकड़ते !

आख़िर नबी की आवाज़ में वोह कौन सी कशिश थी, जिस ने इन की फ़ितरत को हर तरह के एहसासे ज़ियां से बे नियाज़ कर दिया था ?

आख़िर वोह कौन सा जज़्बा और शौक़ था, जिस ने परवानों की तरह जल मरने की आरज़ू उन के सीनों में पैदा कर दी थी ? और येह जानते हुए भी कि इज़्हारे इश्क़ का अन्जाम क्या होगा, वोह बे ख़ौफ़ अपने मक़्तल की तरफ़ बढ़ते चले गए।

मक्का की सर ज़मीन पर शहीदाने वफ़ा के लहू का हर क़तरा पुकारता है कि पैग़म्बर ने तल्वार चला कर नहीं, क़ुरआन सुना कर इस्लाम फैलाया, और मक्का की गलियों में पथ्थरों की चोट से ज़ख़्मी होने वाले मज़्लूमों का हर ज़ख़्म आवाज़ देता है कि क़बूल करने वालों ने ख़ौफ़ से नहीं, शौक़ से इस्लाम क़बूल किया है... दिल पहले मोमिन हुवा, इस के बाद ज़बान ने कलिमा पढ़ा।

जो लोग बद्र व उहुद के माअ़रिकों को सामने रख कर इस्लाम पर तल्वार उठाने का इल्ज़ाम रखते हैं, वोह मक्का के मक़्तल का मुआइना क्यूं नहीं करते ?..वोह ग़ारे सौर में झांक कर हक़ की मज़्लूमी का रिक़्क़त अंगेज़ मन्ज़र क्यूं नहीं देखते ?..वोह शोबे अबी तालिब में क़ैदियों की बे क़रार और सोगवार रातें क्यूं नहीं देखते ?..वोह तारीख़ से येह क्यूं नहीं पूछते कि मक्का में इस्लाम के फैलने की इब्तिदा किस तरह हुई थी ?..किस के क़हरो जब्र से लोग अन्धेरी रातों और पहाड़ की घाटियों में छुप कर इस्लाम क़बूल करते थे ?

वोह क्यूं नहीं देखते कि मक्का में इस्लाम उस वक़्त से फैल रहा था, जब बद्र व उहुद के मारिके किसी के हाशियए ख़याल में भी नहीं थे।

मक्का में इस्लाम उस वक़्त भी फैल रहा था, जब तल्वार इस्लाम के हाथ में नहीं, बल्कि इस्लाम के दुश्मनों के हाथों में थी। इस लिए तारीख़ की इस सच्चाई के सामने हर शख़्स को सरे तस्लीम ख़म कर देना चाहिए कि **इस्लाम दुन्या में इस लिए फैला कि इस्लाम ही इन्सान का फ़ितरी मज़हब है। जिस ने भी इस्लाम क़बूल किया, उस ने जब्र का नहीं, बल्कि अपनी फ़ितरत का तक़ाज़ा पूरा किया।** (मौसूअए इस्लामिय्या अफ़्कारो ख़यालात,11 / 179 ता 183)

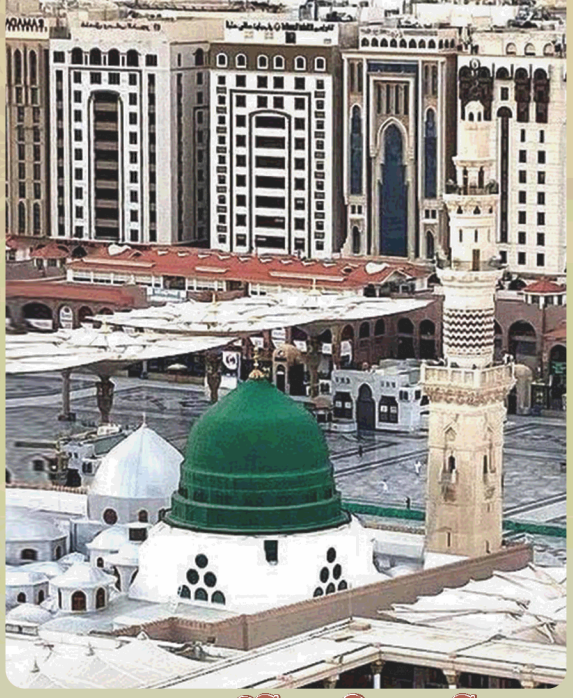

# बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

## बातों से ख़ुश्बू आए

### बारगाहे ख़ुदावन्दी में मर्तबए ख़ातमुल अम्बिया

या रसूलल्लाह ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप क़ुरबान हों ! ख़ुदा के नज़्दीक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मर्तबा इस ह़द को पहुंचा कि उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी बना कर मबऊस किया और ज़िक्र में आप को सब से अव्वल रखा।[1]

(इरशादे ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه)

### नुबुव्वते मुह़म्मदी शिर्कत से पाक है

मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ न तो कोई और नबी है और न आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नबी बनाया जाएगा, जिस त़रह़ अल्लाह पाक की उलूहिय्यत में कोई शरीक नहीं है इसी त़रह़ ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत में कोई शरीक नहीं। (इरशादे ह़ज़रते सुमामा बिन उसाल अल ह़नफ़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه)[2]

### इस्लाम में अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की ह़ैसिय्यत

अगर कोई शख़्स येह अ़क़ीदा नहीं रखता कि ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं तो वोह मुसलमान ही नहीं क्यूंकि येह ज़रूरिय्याते दीन में से है। (इरशादे अ़ल्लामा इब्ने नजीम मिस्री رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)[3]

### मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में ह़ाज़िरी के फ़वाइद

तजरिबए कामिल (इस बात का) शाहिदे आ़दिल (यानी गवाह है) कि बहुत (से) लोग जिन के अक्सर औक़ात मआ़सी (यानी गुनाहों) व फ़ुज़ूलिय्यात में ज़ाएअ़ व बरबाद होते हैं, मजलिसे मौलिद (यानी मह़फ़िले मीलाद शरीफ़) में ह़ाज़िर हो कर दुरूदो सलाम की कसरत करते हैं, तो येह मजलिस करना और इस निय्यत से लोगों को बुलाना, बिलबिदायह ख़ैर की त़रफ़ दावत और शर से रोकना है, जिस की ताकीद व तरग़ीब कलामे इलाही (यानी क़ुरआने करीम) में जा बजा (मौजूद) है।[4]

(इरशादे रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

### दौरे सह़ाबा व ताबेईन में मह़फ़िले मीलाद न होने का सबब

उस ज़माने में इस (यानी मह़फ़िले मीलाद शरीफ़) की ह़ाजत न थी। कोई मज्मअ़ (Gathering), कोई मजलिस ऐसे अज़्कार से ख़ुद ही ख़ाली न होता, अक्सर औक़ात हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ह़ालात विर्दे ज़बान और सग़ीरो कबीर ज़िक्रे वाला (यानी हर छोटा बड़ा ज़िक्रे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में मश्ग़ूल ब दिलो जान थे। रफ़्ता रफ़्ता लोग ह़ुब्बे दुन्या व त़लबे माल व जाह में मसरूफ़, और इस त़रफ़ से ग़ाफ़िल और उमूरे दीन से जाहिल होते गए। जब उ़लमाए किराम ने येह ह़ाल देखा, ऐसे उमूरे ख़ैर व मुफ़ीद को रवाज दिया, और इस ज़माने में तो येह अ़मल मुबारक और इस के अस्साल ह़द्दे ज़रूरत को पहुंचे।[5]

(इरशादे रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

## अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

### न मिटा है न मिटेगा कभी चर्चा तेरा

तक्सीरे ज़िक्र शरीफ़ हुज़ूर सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़क़ तबारक व तआ़ला (यानी ज़िक्रे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कसरत अल्लाह पाक) को मह़बूब और مَعَاذَاللہ इन के ज़िक्र की कमी इन के दुश्मनों की तमन्ना। क़सम उस की जिस ने उन के ज़िक्र को अबदुल आबाद तक रिफ़अ़त (यानी हमेशा के लिए बुलन्दी) बख़्शी फिर ख़ुदा ही का चाहा होगा और उन के दुश्मनों की तमन्ना कभी न बर आए (यानी कभी पूरी न हो) गी। करोड़ों (बद बख़्त) इसी उम्मीद में ज़मीन का पैवन्द हो गए (यानी मर खब गए) कि किसी त़रह़ इन की याद में कमी वाक़ेअ़ हो मगर वोह ख़ुद ही ख़ाक में मिलते गए और इन का ज़िक्र तो क़ियामत तक बुलन्द है जिस से हफ़्त (यानी सातों) आस्मान व ज़मीन गूंज रहे हैं,

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن۔[6]

### सलातो सलाम पढ़ते हुए खड़े होने का अन्दाज़

(मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ वग़ैरा में क़ियाम के मौक़अ़ पर) हाथ बांध कर खड़े होना बेहतर है जैसा कि ह़ाज़िरिए रौज़ए अन्वर के वक़्त ह़ुक्म है।[7]

### फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जारी है

नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़त़ा फ़रमाना, गुनाहों से पाक करना, सुथरा बनाना सिर्फ़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से ख़ास नहीं बल्कि क़ियामे क़ियामत तक तमाम उम्मते मर्ह़ूमा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इन नेमतों से मह़ज़ूज़ (यानी फ़ाएदा उठाने वाली) और हुज़ूर की नज़रे रह़मत से मल्हूज़ (यानी नज़रों में) रहे (गी)।[8]

### मिर्ज़ा क़ादयानी के कुफ़्र में शको शुबा की गुन्जाइश नहीं

इसे (मिर्ज़ा क़ादयानी को) مَعَاذَاللہ मसीह़ मौऊ़द किया महदी या मुजद्दिद या एक अदना दरजे का मुसलमान जानना दर किनार जो इस के अक़्वाले मलऊ़ना पर मुत्त़लअ़ हो कर इस के काफ़िर होने में अदना शक करे वोह ख़ुद काफ़िर मुर्तद है।[9]

### ख़त्मे नुबुव्वत

मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ातमुन्नबिय्यीन मानना, इन के ज़माने में ख़्वाह इन के बाद किसी नबिय्ये जदीद की बिअ़सत को यक़ीनन मुह़ाल व बात़िल जानना फ़र्ज़े अजल व जुज़ए ईक़ान (अ़ज़ीम फ़र्ज़ और ईमान का ह़िस्सा) है।[10]

## अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

### तमाम जहानों के लिए रह़मत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम जहानों के लिए रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाए (हैं)।[11]

### रसूले करीम को आख़िरी नबी मानना अहम तरीन फ़र्ज़ है

मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह पाक का सब से आख़िरी नबी मानना ज़रूरिय्याते दीन में से है, जो इस का इन्कार करे या इस में ज़र्रा बराबर भी शक करे वोह इस्लाम से ख़ारिज, काफ़िर व मुर्तद है।[12]

### अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहमिय्यत

अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत का वोही दरजा है जो अ़क़ीदए तौह़ीद का है यानी दोनों ही ज़रूरिय्याते दीन से हैं। लिहाज़ा मुसलमान के लिए जिस त़रह़ अल्लाह पाक को एक मानना ज़रूरी है ऐसे ही उस के प्यारे ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से आख़िरी नबी मानना भी ज़रूरी है।[13]

### चाहते अ़त्तार

मैं येह चाहता हूं कि हमारे बच्चे बच्चे के ज़ेहन में येह बैठ जाए कि "मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हैं।[14]

**मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा सब से आख़िरी नबी**
**अह़मदे मुज्तबा सब से आख़िरी नबी**

---

(1)الشفاء، 1/45 (2)ثمار القلوب، 1/261 (3)الاشباہ والنظائر، ص161 (4)اذاقۃ الآثام، ص96 (5)اذاقۃ الآثام، ص203 (6)فتاویٰ رضویہ، 4/527، جدید 22 جلد سیٹ (7)فتاویٰ رضویہ، 30/128 (8)فتاویٰ رضویہ، 30/411 (9)فتاویٰ رضویہ، 11/515 (10)فتاویٰ رضویہ، 15/630 (11)صبح بہاراں، ص2 (12)سب سے آخری نبی، ص3 (13)سب سے آخری نبی، ص8 (14)امیر اہل سنت کے 163 ارشادات، ص5۔

# अहकामे तिजारत

**1 वॉरन्टी क्लेम करने की शरई हैसिय्यत ?**

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि किसी भी चीज़ की वॉरन्टी क्लेम करने की शरई हैसिय्यत क्या है ? क्या येह बतौरे एहसान एक इख़्तियारी वादा है कि चाहे तो पूरा किया जाए चाहे तो नहीं ? या फिर इस शर्त़ की पाबन्दी करना दुकानदार या कम्पनी पर लाज़िम है ? वॉरन्टी क्लेम करने से इन्कार कर दिया तो क्या हुक्म है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** वॉरन्टी की शर्त़ के साथ ख़रीदो फ़रोख़्त करना उ़र्फ़ की वजह से जाइज़ है, और जब वॉरन्टी की शर्त़ के साथ किसी चीज़ की ख़रीदो फ़रोख़्त की जाए तो बेचने वाले पर वॉरन्टी क्लेम करना शरअ़न लाज़िम है, अगर वोह वॉरन्टी क्लेम नहीं करता तो ख़रीदार जाइज़ त़रीक़े से उसे वॉरन्टी क्लेम करने पर मजबूर कर सकता है।

बैअ़ में वॉरन्टी की शर्त़ उ़र्फ़ की वजह से जाइज़ है। जैसा कि बहारे शरीअ़त में है : "शर्त़ ऐसी है जिस पर मुसलमानों का आ़म त़ौर पर अ़मल दर आमद है जैसे आज कल घड़ियों में गॉरन्टी साल दो साल की हुवा करती है कि इस मुद्दत में ख़राब होगी तो दुरुस्ती का ज़िम्मेदार बाएअ़ है, ऐसी शर्त़ भी जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, 2 / 701)

जो शर्त़ तआ़मुल की वजह से जाइज़ हो उस पर अ़मल करना शरअ़न लाज़िम है। दुर्रे मुख़्तार और रद्दुल मुह़तार में है :

"يصح البيع بشرط۔۔۔جرى العرف به۔۔۔استحسانا
للتعامل، اى يصح البيع ويلزم الشرط"

**तर्जमा :** ऐसी शर्त़ के साथ बैअ़ करना जिस पर उ़र्फ़ जारी हो तआ़मुल की वजह से इस्तिह़सानन जाइज़ है, यानी बैअ़ दुरुस्त होगी, और शर्त़ लाज़िम होगी।

(ردالمحتار، 7/286)

बेचने वाला वॉरन्टी क्लेम न करे तो उसे इस पर मजबूर किया जा सकता है, जैसा कि बाएअ़ के वादए लाज़िमा पूरा न करने की सूरत में ख़रीदार के लिए ह़क़्क़े जब्र साबित होता है, तो बैअ़ की शर्त़ पूरी न करने की सूरत में ख़रीदार को बदरजए औला ह़क़्क़े जब्र ह़ासिल होगा।

रद्दुल मुह़तार में जामेउ़ल फ़ुसूलीन के ह़वाले से है :

”لو ذکرا البیع بلا شرط ثم ذکرا الشرط علی وجه العدة جاز البیع ولزم الوفاء بالوعد، إذ المواعید قد تکون لازمة فیجعل لازماً لحاجة الناس“

**तर्जमा :** अगर बाएअ़ और मुश्तरी ने बिग़ैर शर्त के बैअ़ का ज़िक्र किया फिर बतौ़रे वादा शर्त का ज़िक्र किया तो बैअ़ सह़ीह़ है और वादा पूरा करना लाज़िम है क्यूंकि वादों को पूरा करना कभी ज़रूरी होता है लिहाज़ा लोगों की ह़ाजत के लिए इस का पूरा करना ज़रूरी क़रार दिया जाएगा। (رد المحتار علی الدر المختار، 282/7)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 किसी ने मार्केट से चीज़ मंगवाई तो उस पर अपना कमीशन रखना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि जब मैं अपने काम से मार्केट जाता हूं तो मुझ से बाज़ औक़ात जानने वाले भी कुछ चीज़ मंगवा लेते हैं मैं उन्हें ला कर दे देता हूं क्या मैं उस पर कमीशन रख सकता हूं ? यानी जितने पैसों की चीज़ आई है उस से कुछ पैसे ज़ियादा ले सकता हूं ? जब कि मैं कमीशन पर काम नहीं करता और मेरा उन से पैसे रखना तै़ नहीं होता।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** पूछी गई सूरत में जब आप मार्केट जाते हैं और आप से कोई जानने वाला मार्केट से चीज़ ला कर देने का कहता है तो उसे चीज़ ला कर देने में आप की हैसिय्यत वकील की है न कि कमीशन एजेन्ट की और इस सूरत में चीज़ ला कर देने में कमीशन यानी चीज़ की क़ीमत से ज़ियादा पैसों के आप ह़क़दार नहीं हैं और अज़ ख़ुद कमीशन के नाम पर पैसे रख लेना, नाजाइज़ व गुनाह है कि येह मंगवाने वाले के साथ धोका देही है जो कि ह़राम व गुनाह है। अगर मुआ़वज़ा लेना चाहते हैं तो सराह़त करना पड़ेगी और मुआ़वज़े की मिक़्दार तै़ भी करनी होगी वरना येह मुआ़मला धोका होगा।

धोका देने वाले के मुतअ़ल्लिक़ रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : من غشنا فلیس منا यानी जो हमें धोका दे वोह हम में से नहीं। (مسلم، 70/1)

दुररुल अह़काम शर्ह़े मुजल्लतुल अह़काम में है :

”لو اشتغل شخص لآخر شیئاً ولم یتفقا ولا علی الأجرة ینظر للعامل إن کان یشتغل بالأجرة عادة یجبر صاحب العمل علی دفع أجرة المثل له عملا بالعرف والعادة، وإلا فلا“

यानी एक शख़्स दूसरे के लिए किसी चीज़ में मश्ग़ूल हुवा और उन के दरमियान उजरत से मुतअ़ल्लिक़ कोई बात न हुई, तो काम करने वाले को देखा जाएगा अगर वोह आ़दतन उजरत के साथ काम करता है तो जिस के लिए काम किया है उसे उजरते मिस्ल देने पर मजबूर किया जाएगा उ़र्फ़ व आ़दत की वजह से, वरना नहीं।

(درر الاحکام فی شرح مجلة الاحکام، 1-3/46)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 बच्चों की लॉटरी की ख़रीदो फ़रोख़्त करना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि आज कल बच्चों के लिए एक लॉटरी मार्केट में आई हुई है कि प्लास्टिक के अंडे में कुछ चॉक्लेट, खिलोने वग़ैरा होते हैं, बच्चा पैसे दे कर वोह अंडा ख़रीदता है, उस अंडे में क्या है, येह मालूम नहीं होता, फिर जब उस अंडे को खोला जाता है तो मालूम होता है कि इस में फुलां चॉक्लेट है या फुलां खिलौना है या इसी त़रह़ की और कोई चीज़ है। सुवाल येह है कि इस त़रह़ की लॉटरी की ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** ऐसी लॉटरी की ख़रीदो फ़रोख़्त ह़राम है। ख़रीदो फ़रोख़्त में शरीअ़ते मुत़ह्हरा की त़रफ़ से एक तक़ाज़ा येह है कि जो चीज़ ख़रीदी जा रही है, वोह मालूम हो, इस में झगड़े की त़रफ़ ले जाने वाली जहालत न हो, ऐसी जहालत बैअ़ को फ़ासिद कर देती है। सुवाल में मौजूद अंडे वाली लॉटरी में जब येह मालूम ही नहीं कि अंडा खोलने के बाद अन्दर से क्या चीज़ निकलेगी, कितनी मालिय्यत की निकलेगी तो यहां भी ख़रीदी गई चीज़ में जहालते कसीरा पाई गई, लिहाज़ा मज़कूरा अंडे वाली लॉटरी की ख़रीदो फ़रोख़्त ना जाइज़ व गुनाह है। अगर अंडे वाली लॉटरी की येह सूरत हो कि बाज़ ख़ाली निकलेंगे और पैसे वापस नहीं मिलेंगे और बाज़ में कुछ न कुछ मालिय्यत की चीज़ निकलेगी तो फिर सिरे से येह ख़रीदो फ़रोख़्त ही नहीं बल्कि येह जुवा है और जुवा, नाजाइज़ व ह़राम है।

बच्चों के लिए आए दिन कोई न कोई इस त़रह़ की लॉटरी मार्केट में आई होती है, जिस को फ़रोख़्त कर के दुकानदार ख़ुद गुनाह कमा रहे होते हैं और बच्चों में जुवा वग़ैरा गुनाहों की आ़दत पड़ने का सामान कर रहे होते हैं, मुसलमानों को चाहिए कि इस त़रह़ की तमाम ग़ैर शरई लॉटरियां फ़रोख़्त करने से बचें और अपने बच्चों को भी इन की ख़रीदारी से रोकें और बचपन ही से ख़रीदो फ़रोख़्त के जाइज़ त़रीक़ों की आगाही फ़राहम करें।

जूए की मज़म्मत बयान करते हुए अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ(۹۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ। (پ7، المائدۃ:90)

मब्सूत़ में है :

"تعلیق استحقاق المال بالخطر قمار، والقمار حرام فی شریعتنا"

यानी किसी माल के ह़ुसूल के लिए अपने माल को ख़त़रे पर पेश करना जुवा है और जुवा हमारी शरीअ़त में ह़राम है। (مبسوط سرخسی، 20/11)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 4 दुकान से पैक चीज़ ख़रीदी अगर ख़राब निकले तो क्या ह़ुक्म है ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम से दुकानदार या गाहक होलसेल पर माल ले कर जाते हैं सामान पेक होता है और वोह गिनती कर के सामान ले जाते हैं फिर कुछ दिनों के बाद आ कर कहते हैं कि आप की येह चीज़ ख़राब निकली है क्या इस सूरत में हम उन को येह कह कर मन्अ़ कर सकते हैं कि हम ने आप को सामान दे दिया था आप का काम था कि चेक कर के ले जाते ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** अश्या की ख़रीदो फ़रोख़्त दो क़िस्म की होती है, एक वोह अश्या जिन को चेक किया जा सकता है जैसे खुले आइटम कि उन को हाथ लगा कर चेक करना मुमकिन है, दूसरी वोह अश्या कि जिन को चेक नहीं किया जा सकता मसलन डब्बे में चाय की पत्ती, डब्बे में बन्द दूध या अंडे वग़ैरा को आ़म त़ौर से दुकान ही पर चेक नहीं किया जाता। ऐसे मुआ़मलात में उसूल येह है कि कोई भी ऐसी चीज़ जिस को सह़ीह़ कह कर बेचा गया अगर उस में ऐ़ब निकल आया और जैसी कह कर बेची गई थी वैसी नहीं निकली तो ख़रीदार को वोह चीज़ वापस करने का ह़क़ होता है और दुकानदार को वोह चीज़ वापस करनी पड़ेगी वोह वापस करने से मन्अ़ नहीं कर सकता। ख़रीदार के इस ह़क़ को फ़ुक़हा **"ख़ियारे ऐ़ब"** के नाम से मौसूम करते हैं और कुतुबे फ़िक़्ह में येह पूरा बाब है जिस में इस के मसाइल लिखे हुए हैं बहारे शरीअ़त में भी ह़िस्सा 11 में इस की तफ़्सील मौजूद है। ख़रीदारी के वक़्त अगर बेचने वाले ने येह कह दिया कि आप येह चीज़ चेक कर लें या जैसी भी है आप की है मैं इस के ऐ़ब से बरियुज़्ज़िम्मा हूं तो इस सूरत में दुकानदार को वोह चीज़ वापस लेना ज़रूरी नहीं। वाज़ेह़ रहे कि ख़रीदार को जिन सूरतों में येह ह़क़ दिया गया है कि वोह ऐ़ब निकलने पर चीज़ वापस कर सकता है येह इख़्तियार कुछ शराइत़ से मशरूत़ है जिन में से एक येह है कि इस चीज़ में ख़रीदार ने मालिकाना तसर्रुफ़ न किया हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# वोही भरते हैं झोलियां सब की

**बे त़लब अपने भिकारी की भरे जो झोली ऐसी सरकार बता दे कोई सरकारों में**[1]

प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को मुख़्तलिफ़ लम्ह़ात और जगहों पर मुख़्तलिफ़ दुआ़ओं से नवाज़ा। इस मज़मून में वोह बा बरकत दुआ़एं मौजूद हैं जिन से सह़ाबए किराम को माली फ़वाइद ह़ासिल हुए।

**ह़ज़रते उ़रवा ने माल में वुस्अ़त यूं पाई** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़रवा बारिक़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक दीनार दिया ताकि वोह एक बकरी ख़रीद लाएं, ह़ज़रते उ़रवा ने उस दीनार से दो बकरियां ख़रीद लीं रास्ते में एक ख़रीदार मिल गया आप ने एक बकरी उस के हाथ एक दीनार में बेच दी फिर एक दीनार और एक बकरी ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए येह देख कर आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के लिए बरकत की दुआ़ की। रावी कहते हैं : अगर ह़ज़रते उ़रवा बारिक़ी मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में भी नफ़्अ़ पा लेते।[2] एक रिवायत के मुत़ाबिक़ कुछ सामाने तिजारत लाया गया तो हुज़ूरे अकरम ने मुझे एक दीनार दिया और इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़रवा ! तुम हमारे लिए एक बकरी ख़रीद लाओ, ह़ज़रते उ़रवा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फरमाते हैं : मैं सामाने तिजारत के पास पहुंचा और एक साथी से भाव ताव कर के उस दीनार के बदले दो बकरियां ख़रीद लीं, अभी वापस आ रहा था कि एक आदमी मिल गया उस ने बकरी के रेट पूछे और ख़रीदनी चाही तो मैं ने उसे एक बकरी एक दीनार के बदले में बेच दी फिर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह आप का दीनार और येह आप की बकरी ! फिर पूरा वाक़िआ़ बयान कर दिया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ दी : अल्लाह ! इस के सौदे में बरकत दे, ह़ज़रते उ़रवा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं इस के बाद कूफ़ा में एक जगह "कनासा" की त़रफ़ जाता तो घर लौटने से पहले चालीस हज़ार नफ़्अ़ कमा लिया करता था।[3]

**ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ के लिए दुआ़ए बरकत** एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को राहे ख़ुदा में सदक़ा देने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपने घर से चार हज़ार दिरहम ले आए और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर में आठ हज़ार दिरहम थे चार हज़ार राहे ख़ुदा में देता हूं और बक़िय्या चार हज़ार घर वालों के लिए रोक लिए हैं, येह सुन कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक होंटों पर येह दुआ़ जारी हो गई : بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ यानी अल्लाह तुम्हें बरकत दे, जो दिया है उस में भी और जो घर वालों के लिए रोका है उस में भी।[4] एक मरतबा बरकत की दुआ़ यूं पाई कि आप ने एक औ़रत से गुठली भर सोना बत़ौरे ह़क़्क़े महर निकाह़ किया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तुम्हें बरकत दे वलीमा करो अगर्चे एक बकरी से ही हो।[5] बारगाहे रिसालत से बरकत की इतनी दुआ़एं पा लेने पर आप फ़रमाते हैं : मेरा अपने बारे में येह ख़याल है कि अगर पथ्थर उठा लूं तो भी उम्मीद होगी उस के नीचे सोना या चांदी मिल जाएगी।[6]

**हज़रते अनस ने माल में कसरत यूं पाई** اَللّٰھُمَّ اَکْثِرْ مَالَہٗ وَوَلَدَہٗ وَاَطِلْ عُمْرَہٗ وَاغْفِرْ ذَنْبَہٗ यानी ऐ अल्लाह ! इस के माल और औलाद में कसरत अ़ता फ़रमा, इसे दराज़िये उ़म्र अ़ता फ़रमा और इस की मग़फ़िरत फ़रमा । तीन दुआ़ओं की मक़्बूलिय्यत का जल्वा तो दुन्या ही में हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस त़रह़ देख लिया कि हर शख़्स का बाग़ साल में एक मरतबा फल देता था जब कि आप का बाग़ साल में दो मरतबा फल देता था बल्कि बरकत का येह आ़लम हुवा कि हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाग़ में एक ऐसा गुले रैह़ान था जिस से मुश्क की ख़ुश्बू आती ।[7] हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम ! (इस दुआ़ की बरकत से) मेरा माल बहुत ज़ियादा है और आज मेरी औलाद और औलाद की औलाद सौ के क़रीब है ।[8]

**हज़रते अबू उमामा ने माले ग़नीमत और जान की ह़िफ़ाज़त यूं पाई** एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जंग पर रवाना किया तो आप ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे लिए शहादत की दुआ़ कीजिए, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! इन्हें सलामत रख और माले ग़नीमत अ़ता फ़रमा । आप कहते हैं : फिर हम ने जंग में हिस्सा लिया और सलामत रहे और माले ग़नीमत भी ह़ासिल किया, फिर दूसरी और तीसरी जंग के मौक़अ़ पर भी मैं ने येही अ़र्ज़ की तो ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोही दुआ़ दी, हम हर मरतबा मह़फ़ूज़ व सलामत रहे और बहुत सारा माले ग़नीमत ले कर वापस पलटे ।[9]

**हज़रते ह़कीम ने तिजारत में कुशादगी यूं पाई** एक मरतबा बह़रैन से माल आया नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह माल सह़ाबा में तक़्सीम करना शुरूअ़ किया, हज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब मुझे बुलाया और मुठ्ठी भर कर माल अ़ता फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मेरे लिए बेहतर है या इस में आज़्माइश है ? इरशाद फ़रमाया : तेरे लिए आज़्माइश है, हज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : मैं ने वोह सारा माल वापस लौटा दिया और अ़र्ज़ की : ख़ुदा की क़सम ! अब मैं आप के बाद किसी से भी तोह़फ़ा नहीं लूंगा, फिर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप मेरे लिए बरकत की दुआ़ कर दीजिए, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! इस के सौदे में बरकत डाल दे । हज़रते ह़कीम तिजारत में बड़े ख़ुश नसीब थे कहीं भी किसी सौदे में आप को कोई नुक़्सान और घाटा नहीं हुवा ।[10] एक मरतबा हज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना एक मकान हज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ एक लाख के बदले में बेचा किसी ने कहा : आप ने येह मकान एक लाख में (इतना सस्ता) क्यूं बेच दिया ? फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! (बड़े फ़ाएदे में बेचा है) मैं ने इस मकान को ज़मानए जाहिलिय्यत में एक मश्कीज़ा शराब के बदले में ख़रीदा था अब तुम सब गवाह हो जाओ कि मकान की सारी रक़म राहे ख़ुदा में देता हूं ।[11]

**हज़रते अ़ब्दुल्लाह ने सौदे में बरकत यूं पाई** नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक जगह से गुज़र हुवा तो देखा कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बच्चों के खेलने के लिए मिट्टी से बना हुवा खिलौना बेच रहे थे, ज़बाने मुबारक पर येह बा बरकत दुआ़ जारी हो गई : ऐ अल्लाह ! इस के सौदे में बरकत रख दे ।[12] एक रिवायत के मुत़ाबिक़ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं अपने भाई की बकरी का सौदा कर रहा था कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और मुझे देख कर कहा : ऐ अल्लाह ! इस के सौदे में बरकत दे, आप फ़रमाते हैं : (बस इस दुआ़ का मिलना था कि) इस के बाद जो भी चीज़ मैं ने ख़रीदी या बेची है उस में मुझे बरकतें मिली हैं ।[13]

---

(1) قبالۂ بخشش، ص214 (2) ابنِ ماجہ، 3/139، حدیث:2402 (3) سبل الہدیٰ والرشاد، 9/17 (4) شرح الشفا للقاری، 1/661 (5) بخاری، 3/449، حدیث:5155 (6) سبل الہدیٰ والرشاد، 10/206 (7) طبقاتِ ابنِ سعد، 7/14-ترمذی 5/451، حدیث:3859 ملخصاً (8) مسلم، ص1035، حدیث:6376 (9) مسند احمد، 8/287، حدیث:22283- معجم کبیر، 8/91 ملخصاً (10) معجم کبیر، 3/205، حدیث:3136، سبل الہدیٰ والرشاد، 10/209 (11) معجم کبیر، 3/186، حدیث:3072 (12) دلائل النبوہ للبیہقی، 6/220 (13) تاریخ ابن عساکر، 27/257۔

# अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा अ़ब्दुल ख़ालिक़ ग़ज़दवानी

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा जलालुद्दीन मुह़म्मद पानीपती उ़स्मानी

मज़ार शैख़ सअ़दुद्दीन ख़ैराबादी

मज़ार ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल अज़हरी

रबीउ़ल अव्वल इस्लामी साल का तीसरा महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है इन में से मज़ीद 11 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

## सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

### शुह़दाए सरिय्या कअ़ब बिन उ़मैर :

रबीउ़ल अव्वल 8 हिजरी को ह़ज़रते कअ़ब बिन उ़मैर ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कमान्ड में 15 सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पर मुश्तमिल दस्ता वादियुल क़ुरा से शाम की जानिब मक़ामे ज़ाते इ़त्लाह़ (नज़्द वादियुल क़ुरा) में बनू क़ुज़ाआ़ की त़रफ़ भेजा गया, मुसलमानों ने उन्हें इस्लाम की दावत दी मगर उन्हों ने इस्लाम लाने के बजाए उन पर ह़म्ला कर दिया। जिस में एक शख़्स के इ़लावा ह़ज़रते कअ़ब समेत 14 अफ़राद शहीद हो गए।[1]

1 ह़ज़रते सालिम मौला अबू ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी, ह़ज़रते अबू ह़ुज़ैफ़ा मोहशिम बिन उ़त्बा क़रशी के मुंह बोले बेटे और बेहतरीन तिलावते क़ुरआन करने वाले थे, ज़ियादा क़ुरआने पाक याद होने की वजह से बादे हिजरत मस्जिदे क़ुबा में ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर समेत तमाम मुहाजिरीन के इमाम मुक़र्रर किए गए, जंगे यमामा (रबीउ़ल अव्वल 12 हिजरी) में मुहाजिरीन के अ़लम बरदार थे और उसी में शहीद हुए। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ुरआने पाक चार सह़ाबा से सीखो : 1 अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द 2 सालिम मौला अबू ह़ुज़ैफ़ा 3 उबय बिन कअ़ब 4 मुआ़ज़ बिन जबल।[2]

## औलियाए किराम رحمہم اللہ السلام

2 इमामे बरह़क़ ह़ज़रते नासिहुद्दीन अबू मुह़म्मद अब्दाल ह़सनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत चिश्त में 10 मुह़र्रम 331 हिजरी और वफ़ात भी यहीं 4 रबीउ़ल अव्वल 411 हिजरी में हुई, आप मादर ज़ाद वली, कसीरुल फ़ैज़ और जंगों में अ़मली त़ौर पर ह़िस्सा लेने वालों में से थे, सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी आप का मोअ़तक़िद था।[3]

3 ह़ज़रते ख़्वाजा अ़ब्दुल ख़ालिक़ ग़ज़दवानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 22 शाबान 435 हिजरी को ग़ज़दवान नज़्द बुख़ारा (उज़्बेकिस्तान) में पैदा हुए और 12 रबीउ़ल अव्वल 575 हिजरी को वफ़ात पाई, मज़ार शरीफ़ ग़ज़दवान में है। आप अपने पीरो मुर्शिद के इ़लावा ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से भी मुस्तफ़ीज़ हुए, आप जलीलुल क़द्र शैख़े त़रीक़त, मुत्तबए सुन्नत और साह़िबे करामात थे।[4]

4 कबीरुल औलिया ह़ज़रते ख़्वाजा जलालुद्दीन मुह़म्मद पानीपती उ़स्मानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 23 शव्वाल 557 हिजरी को पानीपत में पैदा हुए और यहीं 16 रबीउ़ल अव्वल 765 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप मादर ज़ाद वली, ह़ज़रते बू अ़ली क़लन्दर के सोह़बत याफ़्ता और शम्सुल औलिया के मुरीद व ख़लीफ़ा थे, ज़ादुल अबरार किताब आप की तस्नीफ़ कर्दा है, आप से कई करामात का सुदूर हुवा।[5]

5 बानी ख़ानक़ाहे सअ़दिय्या, बड़े मख़्दूम साह़िब शैख़ सअ़दुद्दीन ख़ैराबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ुदवाई क़बीले में पैदा हुए और 882 या 922 हिजरी को ख़ैर आबाद शरीफ़ सीतापूर में विसाल फ़रमाया। हर साल 16 रबीउ़ल अव्वल को आप का उ़र्स होता है, आप आ़लिमे बा अ़मल, उ़लूमे अ़क़्लिय्या व नक़्लिय्या के माहिर, नह़वी

व उसूली, सिल्सिलए चिश्तिय्या निज़ामिय्या के शैख़े त़रीक़त और कई कुतुब के मुसन्निफ़ हैं । मज्मउ़स्सुलूक वल फ़वाइद आप की इ़ल्मी जलालत का पता देती है ।(6)

6 जद्दे आला सादाते लूनी शरीफ़ ह़ज़रते पीर सय्यिद ह़ाजी नेमतुल्लाह शाह मुह़म्मद सालेह़ जीलानी क़ादिरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत हुजरा शाह में हुई और 15 रबीउ़ल अव्वल 1286 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार रह़ीमयार ख़ान में है, आप पीरे त़रीक़त, आ़लिमे दीन और मुह़श्शी ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया हैं ।(7)

## उ़लमाए इस्लाम رحمهم الله السلام

7 आ़लिमे बा अ़मल ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद ह़सन सिद्दीक़ी कालसी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1273 हिजरी में एक इ़ल्मी घराने में हुई और विसाल 13 रबीउ़ल अव्वल 1345 हिजरी को हुवा, मज़ार कालस में है । आप ह़ाफ़िज़े कुरआन, तल्मीज़े अकाबिर उ़लमाए हिन्द, मुरीद व ख़लीफ़ा ख़्वाजा शम्सुल आ़रिफ़ीन, उस्ताज़े दर्से निज़ामी, बेहतरीन कातिब, ज़ाहिरी व बात़िनी ह़ुस्न से मालामाल और अ़वाम व ख़वास के मरजअ़ थे ।(8)

8 जामेअ़ शरीअ़त व त़रीक़त ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती ग़ुलाम यह़्या हाशिमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत भूई गार्ड के एक इ़ल्मी व सूफ़ी घराने में हुई और 11 रबीउ़ल अव्वल 1374 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन कुत़्बाल में हुई । आप जय्यिद आ़लिमे दीन, मुफ़्तिए इस्लाम, मुदर्रिस, सिल्सिलए चिश्तिया, नक़्शबन्दिया और क़ादिरिय्या के शैख़े त़रीक़त, बानी मस्जिद व मद्रसा अक़्सा क़त़्बाल, मेहमान नवाज़ और आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे ।(9)

9 उ़म्दतुल मुदर्रिसीन मौलाना अबुल बयान अह़सानुल ह़क़ क़ादिरी रज़वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत शम्साबाद ज़िल्अ़ अटक के इ़ल्मी घराने में हुई । आप ह़ाफ़िज़े कुरआन, फ़ाज़िले जामिआ़ रज़विय्या मज़हरुल इस्लाम, तल्मीज़ व मुरीद मुह़द्दिसे आज़म, ख़लीफ़ा मुफ़्तिए आज़मे हिन्द व क़ुत़्बे मदीना थे ।12 रबीउ़ल अव्वल 1410 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार जामेअ़ मस्जिद हिजवेरी में है ।(10)

10 शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल अज़हरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर 1334 हिजरी में बरेली शरीफ़ यूपी हिन्द में हुई । आप आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद, जय्यिद आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले जामिअ़तुल अज़हर मिस्र, उस्ताज़ुल उ़लमा, बानिये जामेअ़ मस्जिदे त़यबा थे, आप ने दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली, जामिआ़ अशरफ़िय्या मुबारकपुर, जामिआ़ रज़विय्या और दारुल उ़लूम अमजदिय्या में तदरीस फ़रमाई । तसानीफ़ में आप की तफ़्सीरे अज़हरी के पांच जुज़ ज़ेवरे त़ब्अ़ से आरास्ता हो चुके हैं । आप ने 16 रबीउ़ल अव्वल 1410 हिजरी को विसाल फ़रमाया । मज़ार दारुल उ़लूम अमजदिया में है ।(11)

11 मुह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम महर अ़ली चिश्ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1342 हिजरी को मौज़अ़ मह़मूदपुर के एक दीनी घराने में पैदा हुए । आप फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, तल्मीज़े ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मुफ़्ती शाह अबुल बरकात, बानी दारुल उ़लूम नूरुल मुदर्रिस व जामेअ़ मस्जिद नूर, सदर ईदगाह चिश्तियां, बेहतरीन वाइ़ज़ व मुसन्निफ़ थे । 14 रबीउ़ल अव्वल 1424 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन नूरुल मदारिस के एक गोशे में की गई ।(12)

---

(1)الاستیعاب، 3/380-طبقات ابن سعد، 2/97(2)بخاری، 2/548، حدیث: 3758-الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 3/11تا13-سیر اعلام النبلاء، 3/106تا108
(3)تحفۃ الابرار، ص54-اقتباس الانوار، ص285تا290(4)حضرات القدس مترجم، 1/118تا135-تاریخ مشائخ نقشبند، ص117تا128(5)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 3/62(6)خزینۃ الاصفیاء، 2/304-کتابی سلسلہ الاحسان، سلطان المشائخ نمبر، ص411(7)تذکرۂ سادات اُوچی شریف وسوجا شریف، ص239تا241
(8)تذکرہ علمائے اہل سنت ضلع چکوال، ص101تا103(9)علامہ قاضی عبدالحق ہاشمی اور تاریخ علمائے بھوئی گاڑ، ص119تا128(10)روشن ستارے، ص229تا233-عاشقِ مدینہ، ص41(11)انوار علمائے اہلسنت سندھ، ص1051تا1054
(12)حالات زندگی علامہ غلام مہر علی چشتی، ص2تا11۔

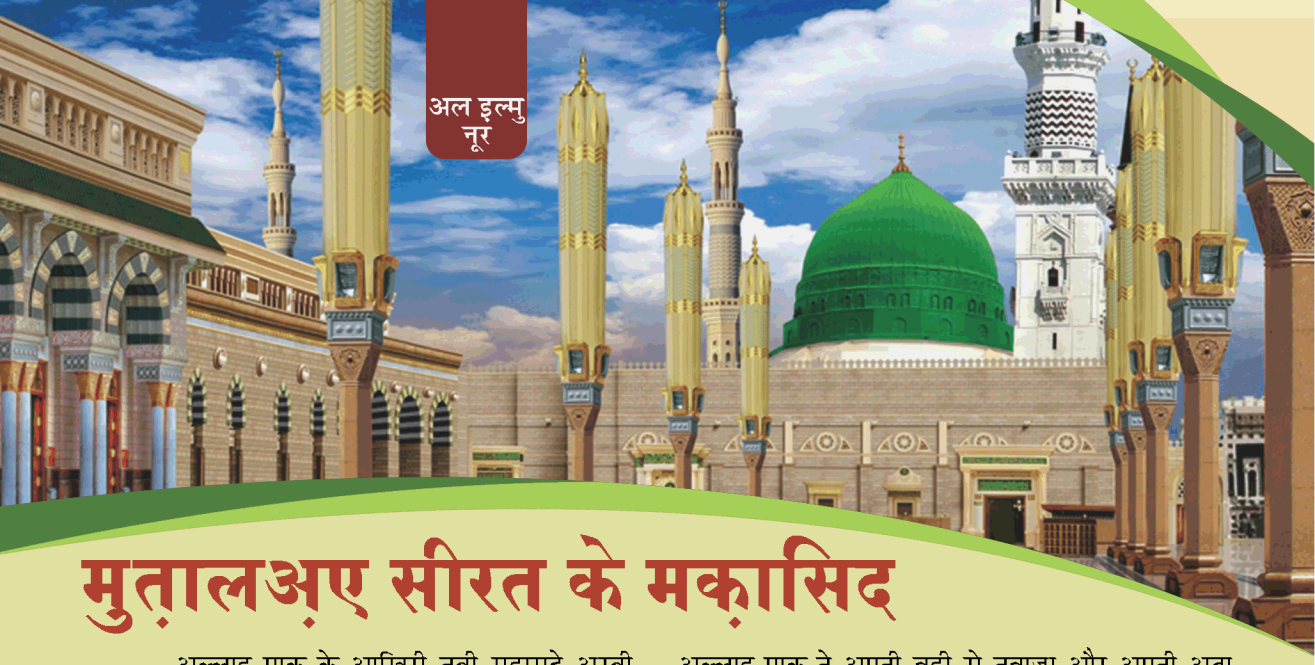

# मुत़ालअ़ए सीरत के मक़ासिद

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी ﷺ की मुबारक सीरत का मुत़ालआ़ बड़ी सआ़दत की बात है, हमें सीरते रसूल के मुत़ालए़ व फ़हम को दूसरे ऐसे तारीख़ी मुत़ालए़ जैसा नहीं समझना चाहिए जिस का मुआ़मला किसी सुल्त़ान व बादशाह की सवानेह़ उ़म्री या किसी पुराने तारीख़ी ज़माने से आगाही जैसा होता है। बल्कि सीरते रसूल के मुत़ालए़ से हमारा अस्ल मक़्सूद येह होना चाहिए कि एक बन्दए मुस्लिम अपने नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मुकर्रम ﷺ की ज़ाते अक़्दस में इस्लाम की ज़िन्दा व जावेद सच्चाई को मुजस्सम देखे। सीरते नबवी के मुत़ालए़ के इस मक़्सद को अगर मज़ीद ह़िस्सों में तक़्सीम करें तो इन का इह़ात़ा दर्जे ज़ैल मक़ासिद में किया जा सकता है :

## मुत़ालअ़ए सीरत का पहला मक़्सद

रसूले करीम ﷺ की पाकीज़ा ज़िन्दगी और वोह ह़ालात जिन में आप ने मुबारक ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारे इन के ज़रीए आप की पैग़म्बराना शख़्सिय्यत को समझा जाए ताकि कामिल यक़ीन ह़ासिल हो कि अल्लाह पाक के आख़िरी पैग़म्बर जनाबे मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ मह़ज़ एक अ़ब्क़री व बा कमाल शख़्सिय्यत न थे कि अपनी बा कमाली के सबब अपनी क़ौम में सब से ऊंचे मर्तबे पर फ़ाइज़ हो गए बल्कि इस से भी पहले वोह अल्लाह तआ़ला के प्यारे पैग़म्बर हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने अपनी वह़ी से नवाज़ा और अपनी अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से उन की मदद व नुसरत फ़रमाई।

## मुत़ालअ़ए सीरत का दूसरा मक़्सद

सीरते नबवी को पढ़ने का एक मक़्सद येह होता है कि जिस इन्सान को नेक ज़िन्दगी गुज़ारनी है उसे ज़िन्दगी के हर पहलू पर अपने सामने आला तरीन मिसाल नज़र आए ताकि वोह अ़मल व इत्तिबाअ़ के लिए उसे दस्तूरे ज़िन्दगी बना सके और हमेशा उस पर कारबन्द रहे और येह बात हर क़िस्म के शक व तरद्दुद से पाक है कि इन्सान ज़िन्दगी के जिस गोशे में भी आला तरीन मिसाल ढूंढ़ना चाहेगा उसे वोह मिसाल निहायत कमाल के साथ अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ की मुबारक ज़ात में मिलेगी। येही वजह है कि अल्लाह करीम ने रसूले अकरम ﷺ की ज़ाते अक़्दस को सारी इन्सानिय्यत के लिए नमूनए अ़मल क़रार दिया है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। (پ21، الاحزاب:21)

## मुत़ालअ़ए सीरत का तीसरा मक़्सद

इन्सान को सीरते नबवी के मुत़ालए़ से अल्लाह पाक की किताब को समझने और रूह़े क़ुरआन व मक़ासिदे क़ुरआन को जानने और मह़सूस करने में मदद मिलेगी

क्यूंकि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात से वाबस्ता वाक़िआ़त से और इन वाक़िआ़त में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक त़र्ज़े अ़मल से नीज़ आप के किताबे इलाही पर कामिल अ़मल से क़ुरआने करीम की बहुत सी आयतों की तफ़्सीर व वज़ाहत होती है जिन के मुत़ालए़ से फ़हमे क़ुरआन का मुआ़मला आसान हो जाता है। ह़ज़रते सअ़द बिन हिश्शाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास आया और अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! मुझे रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बार में बताइए ? आप ने इरशाद फ़रमाया : كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن यानी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन था, क्या तूने अल्लाह पाक का येह फ़रमान नहीं पढ़ा : ﴿وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक तुम यक़ीनन अ़ज़ीम अख़्लाक़ पर हो।) (پ29، القلم:4)

(مسند احمد، 9/380، حدیث:24655)

## मुत़ालअ़ए सीरत का चौथा मक़्सद

सीरते नबवी के मुत़ालए़ का एक अहम मक़्सद येह भी है कि एक मुसलमान के पास अ़क़ाइद, शरई अह़काम और अख़्लाक़िय्यात से मुतअ़ल्लिक़ दुरुस्त इस्लामी सक़ाफ़त व मालूमात का एक अ़ज़ीम ज़ख़ीरा इकट्ठा हो जाए, इस से उसे पता चलेगा कि बन्दए मोमिन को किस त़रह़ के अ़क़ाइद व नज़रिय्यात का ह़ामिल होना चाहिए, उसे किन अह़कामात के तह़त ज़िन्दगी गुज़ारनी है और उसे कैसे अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ होना है क्यूंकि बिलाशुबा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी इस्लाम के जुम्ला उसूल व अह़काम की एक जीती जागती रौशन तस्वीर है।

## मुत़ालअ़ए सीरत का पांचवां मक़्सद

सीरते रसूले अ़रबी पढ़ने का एक मक़्सद येह है कि इस्लामी मुबल्लिग़ और उस्ताद के पास तालीम व तरबियत के त़रीक़ों की एक ज़िन्दा मिसाल मौजूद हो, क्यूंकि ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसलमानों का भला चाहने वाले मुअ़ल्लिम और फ़ज़्ल फ़रमाने वाले मुरब्बी हैं, आप ने दावते दीन के मुख़्तलिफ़ मराह़िल में तालीम व तरबियत के मुफ़ीद तरीन त़रीक़ों की जुस्तजू फ़रमाई और हर वोह त़रीक़ा इख़्तियार फ़रमाया जो सामने वाले के ज़ेह्न व दिल पर दावत का भरपूर असर डाले।

आख़िर वोह कौन सी बात है जिस की वजह से सीरते मुस्त़फ़ा इन तमाम मक़ासिद को पूरा करती है ? वोह अहम बात येह है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ह़यात इन्सानिय्यत के तमाम पहलूओं को मुह़ीत़ है। इन्सान के एक अलग फ़र्द होने और मुआ़शरे का फ़आ़ल रुक्न होने की हैसिय्यत से जो मुआ़शरत इन्सान में पाई जाती है उस के तमाम पहलूओं का भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ह़यात इह़ाता करती है। चुनान्चे, अ़ल्लामा मुह़म्मद सईद रमज़ान बूत़ी लिखते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यात हमारे सामने मिसाली नमूने पेश करती है ! किस के मिसाली नमूने ? एक ऐसे नौजवान के मिसाली नमूने और आला त़ौर त़रीक़े जो दुरुस्त राह पर चलता है और लोगों, दोस्तों के साथ अमानतदार है। एक ऐसे इन्सान के आला नमूने जो ह़िक्मत और अच्छी नसीह़त के साथ बारगाहे इलाही की त़रफ़ बुलाता है, अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए अपनी पूरी कोशिश लगा देता है। एक ऐसे सरबराहे ह़ुकूमत के आला अन्दाज़ जो महारत व बेदार मग़्ज़ी और निहायत दूर अन्देशी के साथ मुआ़मलात की तदबीर व इन्तिज़ाम करता है। ख़ुश मुआ़मलगी में एक बे मिसाल शौहर और शफ़्क़त में एक बा कमाल बाप के आला नमूने जो साथ ही साथ बीवी बच्चों के ह़ुक़ूक़ और उन की ज़िम्मेदारियों में पूरी त़रह़ फ़र्क़ रखता है। एक माहिर अ़स्करी सिपाह सालार के आला अन्दाज़। एक साह़िबे बसीरत सच्चे सियासत दान के मिसाली त़ौर त़रीक़े। एक मुसलमान के आला अन्दाज़ जो कमाले दुरुस्ती व इन्साफ़ से बन्दगिए इलाही के फ़रीज़े को और घर वालों दोस्तों के साथ ख़ुश मिज़ाजी वाली मुआ़शरती ज़िन्दगी को साथ साथ लिए चलता है। चुनान्चे, सीरते नबविय्या का मुत़ालआ़ दर ह़क़ीक़त कुछ और नहीं बल्कि इन ही सब इन्सानी पहलूओं को आला तरीन सांचे में ढले और कामिल तरीन सूरत का लिबादा ओढ़े सामने लाना है।

(فقه السيرة، ص23)

# रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم के मुबारक ख़्वाब

अच्छे ख़्वाब अल्लाह पाक की त़रफ़ से होते हैं और बुरे ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से होते हैं, ह़दीसे पाक में इस से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई करते हुए नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न इरशाद फ़रमाया : "अच्छा ख़्वाब अल्लाह पाक की त़रफ़ से है जब तुम में से कोई अच्छा ख़्वाब देखे तो उसे चाहिए कि उस पर अल्लाह पाक की ह़म्द करे और उस ख़्वाब को किसी के सामने बयान भी कर दे और बुरा ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से है जब कोई ऐसा ख़्वाब देखे तो उस के शर से अल्लाह पाक की पनाह मांगे और उसे किसी के सामने ज़िक्र न करे। बेशक येह ख़्वाब इस को कुछ नुक़्सान न पहुंचाएगा।"[1]

हम जो भी ख़्वाब देखते हैं उस की ताबीर यक़ीनी त़ौर पर पूरी हो येह ज़रूरी नहीं मगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़्वाब में जिस काम का हुक्म दिया जाता है उस पर अ़मल करना होता है नीज़ येह ह़ज़रात जो कुछ देखते हैं वोह हमेशा सच और ह़क़ीक़त में ज़ुहूर पज़ीर भी होते हैं क्यूंकि नबी का ख़्वाब वह़ी होता है, क़ुरआने करीम में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़्वाबों की मिसालें मौजूद हैं। नबिय्ये करीम عَلَیْہِ السَّلَام ने जो ख़्वाब देखे वोह सब के सब यक़ीनन सच्चे और ह़क़ीक़त पर मब्नी थे और इन सब में उम्मत के लिए वाज़ो नसीह़त और कसीर मसाइले शरीअ़त मौजूद हैं, जिस त़रह़ आप के अक़्वाल व फ़रामीन का एक एक ह़र्फ़ ह़ुज्जत और दलील है इसी त़रह़ आप के ख़्वाब भी ऐने शरीअ़त और उम्मत के लिए क़ाबिले अ़मल हैं।

1 पारह 10 सूरतुल अन्फ़ाल की आयत नम्बर 43 में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक मुबारक ख़्वाब का ज़िक्र कुछ यूं होता है : ﴿اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ ह़बीब ! याद करो) जब अल्लाह ने येह काफ़िर तुम्हारी ख़्वाब में तुम्हें थोड़े कर के दिखाए।

(जंगे बद्र के मौक़अ़ पर मुसलमानों पर) येह अल्लाह पाक की नेमत थी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की तादाद थोड़ी दिखाई गई और आप ने अपना येह ख़्वाब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से बयान किया तो इस से उन की हिम्मतें बढ़ीं और अपने ज़ोफ़ व कमज़ोरी का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और दिल मज़बूत़ हुए। ख़्वाब में क़िल्लत की ताबीर ज़ोफ़ से है, चुनान्चे अल्लाह पाक ने मुसलमानों को ग़ालिब फ़रमा कर कुफ़्फ़ार का ज़ोफ़ ज़ाहिर कर दिया।[2]

2 पारह 26 सूरतुल फ़त्ह़ की आयत नम्बर 27 में नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक दूसरे ख़्वाब का ज़िक्र यूं है : ﴿لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْیَا بِالْحَقِّ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब।

इस ख़्वाब की तफ़्सील येह है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुदैबिय्या का क़स्द फ़रमाने से पहले मदीनए तय्यिबा में ख़्वाब देखा था कि आप अपने सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के साथ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में अम्न के साथ दाख़िल हुए और सहाबा में से बाज़ ने सर के बाल मुन्डाए और बाज़ ने तरशवाए। येह ख़्वाब आप ने अपने सहाबा से बयान फ़रमाया तो उन्हें ख़ुशी हुई और इन्हों ने ख़याल किया कि इसी साल वोह मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होंगे। जब मुसलमान हुदैबिय्या से सुल्ह के बाद वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में उन का दाख़िला न हुवा तो मुनाफ़िक़ीन ने मज़ाक़ उड़ाया, ताने दिए और कहा : उस ख़्वाब का क्या हुवा ? इस पर अल्लाह पाक ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और उस ख़्वाब के मज़मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा, चुनान्चे अगले साल ऐसा ही हुवा और मुसलमान अगले साल बड़ी शानो शौकत के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए।[3]

3 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने एक ख़्वाब का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाया : मैं सोया हुवा था कि मैं ने ख़्वाब में दो सोने के कंगन अपने हाथ में देखे, मुझे इन के मुआ़मले ने तश्वीश में मुब्तला कर दिया, तो मुझे हुक्म दिया गया कि इन्हें फूंक मारो, मैं ने फूंका तो वोह उड़ गए, मैं ने उन्हें दो कज़्ज़ाबों से ताबीर किया जो मेरे बाद ज़ाहिर होंगे उन में से एक अ़निसी और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब है।[4]

4 नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे जवामेउ़ल कलिम बना कर मब्ऊ़स किया गया है और रोब के साथ मेरी मदद की गई है एक दिन मैं सोया हुवा था तो (ख़्वाब में) मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां लाई गईं और मेरे हाथ में दे दी गईं। हज़रते अबू हुरैरा फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह (इस दुन्या से) चले गए मगर तुम वोह ख़ज़ाने निकाल रहे हो।[5]

5 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि "मैं जन्नत में हूं फिर मैं ने जन्नत की आला मन्ज़िलों में फ़ुक़रा मुहाजिरीन को पाया और उस में औ़रतें और अग़निया (मालदार लोग) कम तादाद में भी नहीं थे। फिर मुझे बताया गया कि अग़निया तो दरवाज़े पर हैं और उन से हिसाब लिया जा रहा है और उन के गुनाह मुआ़फ़ किए जा रहे हैं जब कि औ़रतों को दो सुर्ख़ चीज़ों यानी रेशम और सोने ने ग़ाफ़िल कर दिया है।[6]"

6 नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं सोया हुवा था कि ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए। जब मैं पहाड़ के दरमियानी हिस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा, येह कैसी आवाज़ें हैं ? तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उल्टा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े तोड़ दिए गए थे जिन से ख़ून बह रहा था। तो मैं ने पूछा, येह कौन लोग हैं ? तो मुझे बताया गया कि येह लोग रोज़ा इफ़्तार करते थे क़ब्ल इस के कि रोज़ा इफ़्तार करना हलाल हो।[7]

7 नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स मेरे पास आया और मुझ से कहा : चलिए ! मैं उस के साथ चल दिया, मैं ने दो आदमियों को देखा, उन में से एक खड़ा था और दूसरा बैठा था, खड़े हुए शख़्स के हाथ में लोहे का ज़म्बूर था जिसे वोह बैठे हुए शख़्स के एक जबड़े में डाल कर उसे इतना खींचता कि गुद्दी तक पहुंचा देता फिर उसे निकालता और दूसरे जबड़े में डाल कर खींचता, इतने में पहले वाला (जबड़ा) अपनी पहली हालत पर लौट आता, मैं ने लाने वाले शख़्स से पूछा : येह क्या है ? उस ने कहा : येह झूटा शख़्स है इसे क़ियामत तक क़ब्र में येही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।[8]

---

(1) بخاری، 4/423، حدیث: 7045 (2) صاوی، ص768، الانفال، تحت الآیۃ: 43 (3) خازن، الفتح، تحت الآیۃ: 27، 4/161 (4) بخاری، 2/507، حدیث: 3621 (5) بخاری، 2/303، حدیث: 2977 (6) الترغیب والترہیب، 3/74، حدیث: 25 (7) صحیح ابن حبان، 9/286، حدیث: 7448 (8) مساوئ الاخلاق للخرائطی، ص76، حدیث: 131۔

# नए लिखारी
## (New Writers)
### नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

## ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुरआनी नसीह़तें

मुह़म्मिद अ़ली अ़त्तारी
( दरजए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ़ज़म )

अम्बिाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام काएनात की अ़ज़ीम तरीन हस्तियां और इन्सानों में हीरों मोतियों की त़रह़ जगमगाती शख़्सिय्यात हैं जिन्हें ख़ुदा ने वह़ी के नूर से रौशनी बख़्शी, ह़िक्मतों के सर चश्मे इन के दिलों में जारी फ़रमाए और सीरत व किरदार की वोह बुलन्दियां अ़त़ा फ़रमाईं जिन की ताबानी से मख़्लूक़ की आंखें ख़ीरा हो जाती हैं । उन में से ख़त़ीबुल अम्बिया ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام भी हैं, अल्लाह पाक ने आप को दो क़ौमों की त़रफ़ मबऊ़स फ़रमाया : 1 अहले मदयन 2 अस्ह़ाबुल ऐका ।

ह़ज़रते इ़क्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के इ़लावा किसी नबी को दो बार मबऊ़स नहीं फ़रमाया । आप عَلَيْهِ السَّلَام को एक बार अहले मदयन की त़रफ़ भेजा जिन की अल्लाह पाक ने हौलनाक चीख़ और ज़ल्ज़ले के अ़ज़ाब के ज़रीए गिरिफ़्त फ़रमाई । दूसरी बार अस्ह़ाबुल ऐका की त़रफ़ भेजा जिन की अल्लाह पाक ने शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब से गिरिफ़्त फ़रमाई । (सीरतुल अम्बिया, स. 505)

जिस त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने जा बजा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नसीह़तें क़ुरआने पाक में बयान फ़रमाई इसी त़रह़ अपने प्यारे नबी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की भी नसीह़तें क़ुरआने पाक में बयान फ़रमाई हैं । आइए चन्द नसीह़तें मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं :

### 1 अल्लाह पाक से डरने की नसीह़त फ़रमाई

﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ(۱۵۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो । (پ19، الشعرآء: 179)

### 2 नाप तोल पूरा करने के बार में नसीह़त

﴿اَوْفُوا الْكَیْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِیْنَ(۱۸۱) وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِیْمِ(۱۸۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो और सीधी तराज़ू से तोलो ।(پ19، الشعرآء: 181،182)

### 3 ज़मीन में फ़साद न फैलाने की नसीह़त

﴿وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ(۱۸۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों की चीज़ें कम कर के न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो । (پ19، الشعرآء: 183)

### 4 अल्लाह पाक के ख़ूब जानने के बारे में नसीह़त

﴿قَالَ رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ(۱۸۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कोतक (कर्तूत) हैं । (پ19، الشعرآء: 183)

### 5 अल्लाह पाक की बन्दगी के बारे में नसीह़त

﴿وَاِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ۙ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ(۳۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मदयन की त़रफ़ उन के हम क़ौम शुऐ़ब को भेजा तो उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की उम्मीद रखो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो । (پ20، العنکبوت: 36)

अल्लाह पाक से दुआ है कि हमें हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की नसीहतों पर अमल कर के ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰه عليه واٰله وسلَّم

## रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का 3 चीज़ों के बयान से तरबियत फ़रमाना

सय्यिद हुदैरुल हसन
( दरजए ख़ामिसा जामिअतुल मदीना शाह अबुल बरकात )

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात जवामिउल कलिम (यानी मुख़्तसर गुफ़्तगू और मुफ़स्सल मआनी) के वस्फ़े कमाल से मुत्तसिफ़ है, आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुतअद्दिद अहादीसे तय्यिबात में तीन चीज़ों के बयान से तरबियत करना मिलता है । अगर्चे तीन का अदद है तो मुख़्तसर लेकिन हुज़ूर जाने आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन तीन चीज़ों की तरबियत में हज़ारहा चीज़ों की तरबियत और सेंकड़ों मसाइल का हल मौजूद है, इन अहादीसे तय्यिबात में से चन्द दरजे ज़ैल हैं :

### 1 तीन ख़स्लतों में ईमान की चाश्नी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स में तीन ख़स्लतें हों वोह ईमान की हलावत (मिठास) पा लेगा । (1) अल्लाह व रसूल उस के नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब हों (2) उस की महब्बत किसी भी बन्दे से फ़क़त अल्लाह ही के लिए हो (3) वोह कुफ़्र में वापस लौटने को ऐसा बुरा जाने जैसा कि आग में डाले जाने को बुरा जानता है । (بخاری، 1/17، حدیث: 16)

### 2 तीन लोगों से अल्लाह कलाम नहीं फ़रमाएगा

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन क़िस्म के लोग हैं कि जिन से अल्लाह पाक गुफ़्तगू नहीं करेगा, न क़ियामत के रोज़ उन की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा, न उन्हें (गुनाहों से) पाक करेगा और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा । हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अर्ज़ की : नाकाम हो गए और नुक़्सान से दो चार हुए । ऐ अल्लाह के रसूल ! येह कौन हैं ? फ़रमाया : अपना कपड़ा (टख़्नों से) नीचे लटकाने वाला, एहसान जताने वाला और झूटी क़सम से अपने सामान की मांग बढ़ाने वाला । (مسلم، ص65، حدیث: 293)

### 3 तीन ममनूआ चीज़ों की इबाहत का हुक्म

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मैं ने तुम्हें तीन बातों से रोका था, अब मैं तुम्हें इन के बारे में हुक्म देता हूं । 1 मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था, अब उन की ज़ियारत को जाया करो । बेशक इन की ज़ियारत में इब्रत और नसीहत है । 2 मैं ने तुम्हें चमड़े के बरतनों के इलावा में पीने से मन्अ किया था, तो सब क़िस्म के बरतनों में पी सकते हो लकिन कोई नशा आवर चीज़ मत पिओ । 3 मैं ने तुम्हें कहा था कि क़ुरबानी का गोश्त तीन दिन के बाद इस्तिमाल करना मन्अ है तो अब इसे खा सकते हो और अपने सफ़रों में इस से फ़ाएदा उठाओ । (ابو داؤد، 3/465، حدیث: 3698)

### 4 मुसलमान का दिल तीन चीज़ों में ख़ाइन नहीं

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसलमान का दिल तीन चीज़ों में ख़ियानत नहीं करता, अमल को ख़ालिसतन अल्लाह के लिए अन्जाम देना, मुसलमानों के अइम्मा की ख़ैर ख़्वाही करना और मुसलमानों की जमाअत में शामिल रहना ।

(ابن ماجہ، 1/151، حدیث: 230)

### 5 तीन चीज़ों का सवाब क़ब्र में भी

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब इन्सान मर जाता है तो उस के अमल का सिल्सिला बन्द हो जाता है सिवाए तीन चीज़ों के : (1) सदक़ए जारिया (2) ऐसा इल्म जिस से लोग फ़ाएदा उठाएं और (3) नेक व सालेह औलाद जो उस के लिए दुआ करे ।

(ترمذی، 3/88، حدیث: 1381)

अल्लाह पाक हमें नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात पर अमल करने और दूसरे मुसलमानों तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰه عليه واٰله وسلَّم

## मेज़बान के हुक़ूक़

अह़मद इफ़्तिख़ार अ़त्तारी
( दरजए सादिसा जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म )

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ मेहमान की इ़ज़्ज़तो तौक़ीर और अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मेहमान नवाज़ी करना मेज़बान की ज़िम्मेदारी है इसी त़रह़ हमारा दीने इस्लाम हमें येह भी सिखाता है कि एक मेहमान को मेज़बान के साथ कैसे पेश आना चाहिए। आइए ! मेज़बान के 5 हुक़ूक़ पढ़ कर अपने इल्मो अ़मल में इज़ाफ़ा करते हैं :

**1 ज़ियादा देर न ठहरना** फ़रमाने आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मेहमान के लिए येह ह़लाल नहीं कि मेज़बान के यहां ठहरा रहे कि उसे ह़रज में डाल दे। (بخاری، 136/4، حدیث: 6135)

**2 मेज़बान को गुनाह में मुब्तला न करना** ह़दीसे मुबारक में मेहमान को हुक्म दिया गया है कि किसी मुसलमान शख़्स के लिए ह़लाल नहीं कि वोह अपने (मुसलमान) भाई के पास इतना अ़र्सा ठहरे कि उसे गुनाह में मुब्तला कर दे, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह उसे गुनाह में कैसे मुब्तला करेगा ? इरशाद फ़रमाया : वोह अपने भाई के पास ठहरा होगा और ह़ाल येह होगा कि उस के पास कोई ऐसी चीज़ न होगी जिस से वोह उस की मेहमान नवाज़ी कर सके। (مسلم، ص736، حدیث: 5414)

**3 मेहमान नवाज़ी से ख़ुश होना**

﴿لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا (۱۴۸)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का एलान करना मगर मज़लूम से और अल्लाह सुनता जानता है। (پ6، النسآء: 148)

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुवा था और उन्हों ने अच्छी त़रह़ उस की मेज़बानी न की, जब वोह वहां से निकला तो उन की शिकायत करता हुवा निकला।

(بیضاوی، النسآء، تحت الآیۃ: 148، 272/2)

इस से उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिए जो मेज़बान की मेहमान नवाज़ी से ख़ुश नहीं होते अगर्चे मेज़बान ने कितनी ही तंगी होने के बा वुजूद खाने का एहतिमाम किया हो। ख़ुसूसन रिश्तेदारों में और बिल ख़ुसूस सुसराली रिश्तेदारों में मेहमान नवाज़ी पर शिकवा शिकायत आ़म है।

**4 दावत के बिग़ैर खाना न खाना**

﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَ لٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो नबी के घरों में न ह़ाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ मसलन खाने के लिए बुलाए जाओ न यूं कि ख़ुद उस के पकने की राह तको हां जब बुलाए जाओ तो ह़ाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न येह कि बैठे बातों में दिल बहलाओ। (پ22، الاحزاب: 53)

मुफ़्ती क़ासिम साहिब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : कोई शख़्स दावत के बिग़ैर किसी के यहां खाना खाने न जाए। और मेहमान को चाहिए कि वोह मेज़बान के हां ज़ियादा देर तक न ठहरे ताकि उस के लिए ह़रज और तक्लीफ़ का सबब न हो। (सिरातुल जिनान, 8 / 73)

**5 मेहमान को चार बातें ज़रूरी हैं :** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहारे शरीअ़त में तह़रीर फ़रमाते हैं कि मेहमान को चार बातें ज़रूरी हैं : 1 जहां बिठाया जाए वहीं बैठे 2 जो कुछ उस के सामने पेश किया जाए उस पर ख़ुश हो, येह न हो कि कहने लगे : इस से अच्छा तो मैं अपने ही घर खाया करता हूं या इसी क़िस्म के दूसरे अल्फ़ाज़ 3 बिग़ैर इजाज़ते साहिबे ख़ाना (यानी मेज़बान से इजाज़त लिए बिग़ैर) वहां से न उठे और 4 जब वहां से जाए तो उस के लिए दुआ करे। (बहारे शरीअ़त, 3 / 394)

अल्लाह पाक हमें दीगर हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ साथ मेज़बान के हुक़ूक़ भी अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰه عليه واٰله وسلَّم

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

# महब्बते रसूल صلی اللہ علیہ والہ وسلم के तक़ाज़े

आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّنِیْ كَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ यानी जो मुझ से महब्बत करेगा वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(ترمذی، 4/309، حدیث: 2678)

प्यारे बच्चो ! हमारा ईमान रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की महब्बत के बिग़ैर पूरा नहीं होता। सहाबए किराम भी नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم से बहुत महब्बत किया करते थे बाज़ की महब्बत की कैफ़िय्यत येह थी कि उन के लिए हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم से जुदाई का सदमा नाक़ाबिले बरदाश्त होता था।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़्हा 160 पर है : सहाबिए रसूल हज़रते सौबान رضی اللہ تعالیٰ عنہ भी नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم के साथ बहुत महब्बत करते थे एक दिन हुज़ूर علیہ السلام की बारगाह में हाज़िर हुए, बहुत ग़मगीन हालत थी चेहरे का रंग बदला हुवा था तो हुज़ूर علیہ السلام ने पूछा : आज रंग क्यूं बदला हुवा है ? अर्ज़ किया : न मुझे कोई बीमारी है न दर्द बस येही वजह है कि जब आप सामने नहीं होते तो इन्तिहा दरजे की वहशत व परेशानी हो जाती है जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस तरह आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم का दीदार कर सकूंगा, आप आला तरीन मक़ाम में होंगे मुझे अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो इस मक़ामे आ़ली तक रसाई कहां होगी इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

﴿وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ فَاُولٰٓىٕكَ مَعَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَ الصِّدِّیْقِیْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِیْنَ ۚ وَ حَسُنَ اُولٰٓىٕكَ رَفِیْقًا(۶۹)﴾

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं। (پ5، النسآء: 69)

यूं हज़रते सौबान رضی اللہ تعالیٰ عنہ को तसल्ली दी गई कि जो हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की इताअ़त व फ़रमां बरदारी करेगा वोह जन्नत में हुज़ूर علیہ السلام के साथ होगा।

प्यारे बच्चो ! हमें हुज़ूर علیہ السلام से महब्बत का अज्र भी मिलेगा, बरोज़े क़ियामत हुज़ूर की शफ़ाअ़त भी मिलेगी और अल्लाह की रहमत से रसूलुल्लाह का साथ भी मिलेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل

इस के लिए हमें हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की तालीमात पर अ़मल करना होगा महब्बते रसूल का येही तक़ाज़ा है। चुनान्चे :

❋ नमाज़ों की पाबन्दी करना ❋ वालिदैन की ख़िदमत करना ❋ बड़ों की इ़ज़्ज़त और छोटों पर शफ़्क़त करना ❋ क़ुरआने पाक पढ़ना ❋ अहादीसे मुबारका पढ़ना ❋ दीनी मालूमात हासिल करते रहना ❋ हमेशा सच बोलना ❋ नेकियां करते रहना और महब्बते रसूल में अपनी ज़बान को ज़िक्रो दुरूद से तर रखना येह सब रसूल से महब्बत के तक़ाज़ों में शामिल है।

शुरूअ़ में लिखी हुई हदीसे मुबारक पर अ़मल की निय्यत से, रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की महब्बत में इन नेक आमाल पर अ़मल कीजिए और जन्नत में रसूलुल्लाह के पड़ोसी बन जाइए।

अल्लाह पाक हमें हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की सच्ची महब्बत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

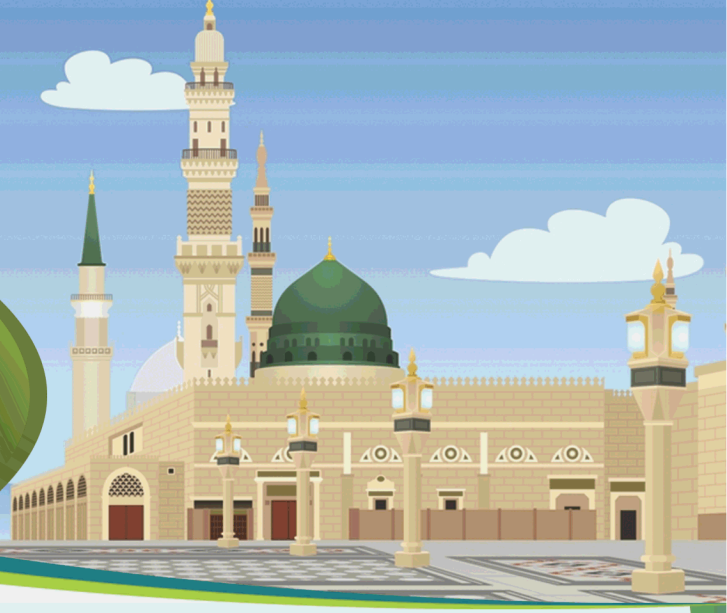

# शजरो ह़जर दीवारो दर में बदल गए

आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात गोया मोजिज़ात की कान थी, आपके मोजिज़ात सुनने पढ़ने वालों को न सिर्फ़ ह़ैरतज़दा करते हैं बल्कि मह़ब्बते मुस्त़फ़ा में इज़ाफ़े का भी ज़रीआ़ हैं। यहां ऐसा ही एक ह़ैरत अंगेज़ मोजिज़ा मुलाह़ज़ा कीजिए जो ख़ास त़ौर पर तो रसूले मोह़तरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़या व शर्म के बारे में है मगर साथ ही साथ येह वाक़िआ़ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मश्हूरे ज़माना सलाम के इस शेर का भी मिस्दाक़ है

**वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें**
**उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम**

ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से एक सफ़रे जंग में फ़रमाया : "कहीं क़ज़ाए ह़ाजत के लिए जगह है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया कि इस मैदान में आदमियों की कसरत के सबब कहीं ठिकाना नहीं है। आप ने फ़रमाया : जा कर देखो कहीं दरख़्त या पथ्थर हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि कुछ दरख़्त क़रीब क़रीब नज़र आ रहे हैं, फ़रमाया : उन दरख़्तों से जा कर कहो कि अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम को हुक्म देते हैं कि उन की क़ज़ाए ह़ाजत के लिए इकठ्ठे हो जाओ और पथ्थरों से भी येही कहना। मैं ने हुक्म की तामील में उन से जा कर कहा तो अल्लाह की क़सम ! दरख़्त क़रीब क़रीब हो कर एक साथ जम्अ़ हो गए और पथ्थर भी आपस में जुड़ कर दीवार बन गए। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के बाद मुझ से फ़रमाया : इन से कह दो कि अ़लाह़िदा हो जाएं, मैं ने कहा तो अल्लाह की क़सम वोह दरख़्त और पथ्थर एक दूसरे से जुदा हो कर अपनी अपनी जगह चले गए। (الشفاء، 1/300)

इस अ़ज़ीम मोजिज़े की रौशनी में चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

❁ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निहायत शर्मो ह़या वाले थे ❁ हमें भी शर्मो ह़या को अपनी त़बीअ़त का ह़िस्सा बना लेना चाहिए ❁ सफ़र या किसी मजबूरी में भी दीनी तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखना चाहिए ❁ ग़ैर मामूली ह़ालात में भी जिस ह़द तक मुमकिन हो उस ह़द तक पर्दा दारी और दीगर अह़कामे शरअ़ की पाबन्दी करनी चाहिए ❁ ज़रूरत पड़ने पर किसी चीज़ का ख़ुसूसी इन्तिज़ाम व एहतिमाम करने में कोई मुज़ाएक़ा नहीं ❁ अल्लाह पाक ने अपने ह़बीब को बे इन्तिहा इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए थे ❁ शजरो ह़जर जैसी बे जान चीज़ें भी हुक्मे मुस्त़फ़ा का एह़तिराम और तामील किया करती थीं ❁ अगर कभी इर्द गिर्द के माह़ोल में आ़रिज़ी त़ौर पर कोई तब्दीली करने की ज़रूरत पेश आए तो ज़रूरत ख़त्म होने के बाद फ़ौरी त़ौर पर माह़ोल को साबिक़ा ह़ालत में मामूल पर ले आना चाहिए ताकि दूसरों को आज़माइशो परेशानी का सामना न करना पड़े।

जानवरों की सबक़ आमोज़ कहानियां

# कबूतरी और च्यूंटी

**एक** च्यूंटी नहर के किनारे पानी पीने गई वोह पानी पी रही थी कि अचानक पानी में गिर गई। वोह अपनी जान बचाने के लिए किनारे की त़रफ़ लपकी लेकिन एक लहर आई और उसे किनारे से दूर ले गई, एक कबूतरी ने च्यूंटी को इस त़रह़ पानी में डूबते देखा तो उसे च्यूंटी पर बड़ा रह़म आया उस ने एक तिन्का अपनी चोंच में पकड़ा और उस के पास फेंक दिया। च्यूंटी उस तिन्के पर चढ़ कर किनारे तक पहुंच गई और यूं उस की जान बच गई। कुछ दिनों बाद एक शिकारी जंगल में आया, उस ने शिकार करने के लिए कबूतरी पर अपनी बन्दूक़ तानी और निशाना लेने लगा। इत्तिफ़ाक़न च्यूंटी ने उसे देख लिया, इस से पहले कि शिकारी गोली चलाता च्यूंटी ने उस के पांव पर काट लिया। शिकारी दर्द से तिलमिला उठा और उस का निशाना ग़लत़ हो गया, यूं कबूतरी की जान बच गई। इस त़रह़ च्यूंटी ने कबूतरी के अच्छे सुलूक का बदला उस की जान बचा कर दिया।

(त़रीक़ते जदीदा, स. 143, जुज़ सानी, मुलख़्ख़सन)

**हिकायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल**

**प्यारे बच्चो !** इस हिकायत से येह दर्स मिला कि अगर हम किसी के साथ भलाई करेंगे तो हमारे साथ भी भलाई होगी जैसा कि कबूतरी ने च्यूंटी की जान बचाई तो च्यूंटी ने भी कबूतरी की जान बचाई लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि हमेशा दूसरों के साथ अच्छा सुलूक करें, कभी किसी को तक्लीफ़ न दें, किसी को परेशान न करें, किसी की चीज़ न चुराएं, किसी को धोका न दें, किसी पर झूटा इल्ज़ाम न लगाएं, किसी का दिल न दुखाएं, किसी का नाम न बिगाड़ें, किसी का मज़ाक़ न उड़ाएं, क्यूंकि अगर हम दूसरों के साथ अच्छा सुलूक करेंगे, उन की इ़ज़्ज़त करेंगे, दुख दर्द, तक्लीफ़ व परेशानी में दूसरों की मदद करेंगे, सच बोलेंगे तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दूसरे भी हमारे साथ भलाई करेंगे।

अल्लाह पाक हमें सब के साथ अच्छा सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# बच्चो ! इन से बचो

**नाम बिगाड़ना** प्यारे बच्चो ! किसी का नाम बिगाड़ना यानी ऐसे नाम से पुकारना जो उसे बुरा लगता हो मसलन मोटू, कोड्डू, कालू, लम्बू, पतलू वग़ैरा कहना गुनाह है। अल्लाह पाक ने हमें इस से मन्अ़ फ़रमाया है, क़ुरआने करीम में है : ﴿وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ﴾ यानी एक दूसरे के बुरे नाम न रखो। (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान, पा 26, अल हुजुरात : 11) लिहाज़ा दूसरों का नाम बिगाड़ने से बचिए ! और जो बिगाड़ता है उसे नर्मी से मन्अ़ कीजिए।

**नक़्लें उतारना** किसी के चलने, बात करने या फिर हाथ वग़ैरा हिलाने का त़रीक़ा देख कर बाज़ बच्चे उस के सामने उस की नक़्ल उतारते हैं जिस से सामने वाले का दिल दुखता और उसे अज़िय्यत होती है और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ दी गोया उस ने मुझे तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी गोया उस ने अल्लाह पाक को तक्लीफ़ दी।" (معجم اوسط، 2/386، حدیث:3607) लिहाज़ा दूसरों की नक़्लें उतारने से बचिए।

**दूसरों से मांग कर चीज़ खाना** बाज़ बच्चों में एक बुरी आ़दत येह भी पाई जाती है कि वोह दूसरों से मांग कर चीज़ें खाते हैं जो कि अच्छी आ़दत नहीं है इस से उन का वक़ार (Image) भी ख़राब होता है और इस बुरी आ़दत की वजह से दूसरे बच्चे उन के साथ बैठ कर खाना पीना भी पसन्द नहीं करते। ऐसे बच्चों को चाहिए कि खाने की चीज़ें अपने घर से ले कर जाएं और दूसरों से मांग कर मत खाएं।

ग़ौर कीजिए ! कहीं येह बुरी आ़दात आप में तो मौजूद नहीं।

# हुरूफ़ मिलाइए !

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ز | ہ | ا | د | خ | ہ | ا | ر |
| ع | ف | ہ | ی | ل | م | ز | م | ل |
| ل | ن | د | ی | ا | ا | ق | ب | ع |
| م | ذ | ی | ر | ی | ش | ب | ر | ب |
| ر | ی | ش | ج | و | ی | ا | ا | م |
| ر | ر | س | ت | غ | ف | ن | م | ش |
| ر | ی | ن | م | ج | ا | ر | س | ہ |
| ی | م | ا | ل | **م** | **ی** | **ر** | **ک** | و |
| ر | ک | ذ | س | ر | م | ی | ع | د |

अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में अपने प्यारे महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बेशुमार कमालात व औसाफ़ बयान फ़रमाए हैं । क़ुरआने मजीद के लफ़्ज़ लफ़्ज़ से रिफ़्अ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू आती है। क़ुरआने करीम में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत सारे नाम बयान हुए हैं। इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़ियादा नामों वाला होना आप की अ़ज़्मत पर दलालत करता है । (الریاض الانیقہ، ص14ماخوذاً) क़ुरआने करीम में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दो ज़ाती नाम मुह़म्मद, अह़मद और बहुत सारे सिफ़ाती नमा बयान हुए हैं।

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पांच सिफ़ाती नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "करीम" तलाश कर के बताया गया है।

**तलाश किए जाने वाले 5 अलफ़ाज़ ये हैं :**

1 بشیر 2 نذیر 3 مزمل 4 مشہود 5 سراج منیر۔

## बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सबसे पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, इन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

### बच्चों के 3 नाम

| नाम | पुकारने के लिए | माना | निस्बत |
|---|---|---|---|
| मुह़म्मद | अ़ब्दुल ह़क़ | लाइक़ हस्ती ( यानी अल्लाह ) का बन्दा | अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की त़रफ़ लफ़्ज़े "अ़ब्द" की इज़ाफ़त के साथ |
| मुह़म्मद | अमीन | अमानत दार | सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम |
| मुह़म्मद | शुऐ़ब | छोटी जमाअ़त | अल्लाह के नबी عَلَیْہِ السَّلَام का बा बरकत नाम |

### बच्चियों के 3 नाम

| | | |
|---|---|---|
| उसैला | शरफ़ और बुज़ुर्गी वाली | सह़ाबिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बा बरकत नाम |
| रुमैसा | एक सितारे का नाम | सह़ाबिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बा बरकत नाम |
| अनीक़ा | ख़ुश आइन्द, ख़ूब | ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम |

( जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें । )

# बेटियों को महब्बत व इताअते रसूल صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की तरबियत दें

**मुहम्मद की महब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है**
**इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है**

इस्लाम से क़ब्ल अगर दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुआशरों में औरत की हैसिय्यत देखी जाए तो मालूम होगा कि औरतों की हैसिय्यत बस एक ख़िदमतगार की सी थी, इन के साथ जानवरों से बदतर सुलूक होता, विरासत में दीगर मालो अस्बाब की तरह इन का भी बटवारा होता, बेटी की पैदाइश को बाइसे आर (शर्मिन्दगी) समझा जाता, आर से बचने के लिए अपनी बेटी को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़्न कर दिया जाता। इन्सानिय्यत रंजो ग़म से बेचैन और बे क़रार थी, फिर एक दिन ऐसा आया कि इन्सानिय्यत को इस का हक़ीक़ी मुहाफ़िज़ मिल गया। इस्लाम की सुब्हे नूर क्या तुलूअ हुई हर तरफ़ कुफ़्र और ज़ुल्मो सितम का अन्धेरा भी ख़त्म हो गया और यूं बेटियों को इस्लाम की बरकत से एक नई ज़िन्दगी मिली। जो लोग पहले बेटियों को ज़िन्दा दर गोर करने में फ़ख़्र महसूस करते थे, अब बेटियों को अपनी आंखों का तारा समझने लगे।

अल्लाह के महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने औलाद बिल ख़ुसूस बेटियों की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ाइल बयान फ़रमा कर इन की अहम्मिय्यत को भी ख़ूब उजागर फ़रमाया। येह हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह एहसाने अ़ज़ीम है कि दुन्या की तमाम औरतें अगर अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक इस एहसान का शुक्रिय्या अदा करती रहें फिर भी वोह इस अ़ज़ीमुश्शान एहसान की शुक्र गुज़ारी के फ़र्ज़ से सुबुकदोश नहीं हो सकतीं।

औरतों के लिए मक़ामे शुक्र है कि एक वक़्त वोह था जब दुन्या में इन का पैदा होना शर्मिन्दगी और ज़िल्लत व रुस्वाई समझा जाता था मगर इस्लामी तालीमात, क़ुरआनी आयात और अहादीसे मुबारका ने इन की अहम्मिय्यत उजागर कर के इस बात का शुऊ़र दिलाया कि बेटियां रहमते ख़ुदावन्दी के नुज़ूल का बाइस हैं, लिहाज़ा इन की क़द्र करनी चाहिए। चुनान्चे, येही वजह है कि आज के इस पुर आशोब दौर में इस्लामी तालीमात से आरास्ता मां बाप की तरबियत व तवज्जोह जहां बेटों को मुआशरे का एक बा इ़ज़्ज़त फ़र्द बनाने पर मरकूज़ है वहीं वोह बेटी की बेहतरीन परवरिश से भी ग़ाफ़िल नहीं।

येह बहुत ज़रूरी है कि हम अपनी आइन्दा नस्लों बिल ख़ुसूस बेटियों को पाकीज़गी व पाक दामनी का पैकर बनाने और तौहीद व रिसालत की पहचान करवाने की भरपूर कोशिश करें। आला ह़ज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बचपन से जो आदत पड़ती है कम छूटती है। लिहाज़ा जो लोग बेटी की तरबियत में कोताही के मुर्तकिब होते हैं दर हक़ीक़त वोह आने वाली नस्ल की तरबियत में कोताही के मुर्तकिब होते हैं। अपनी बेटी को इब्तिदाई उ़म्र से ही तौहीद व रिसालत के जाम पीने का ऐसा आदी बना दें कि जिस की लज़्ज़त में गुम हो कर उसे ज़िन्दगी भर किसी दूसरी तरफ़ देखने का होश ही न रहे।

इस लिए चाहिए कि ऐसे अस्बाब पैदा किए जाएं कि आप की बेटी के दिल में दुरूदे पाक और नात शरीफ़ पढ़ने और सुनने का ज़ौक़ो शौक़ पैदा हो जाए, उस के सामने अल्लाह अल्लाह करते रहिए।

बेटियों को येह भी बताया जाए कि आक़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेटियों पर किस क़दर एहसान है, बेटी की एक एक सांस नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे करम का नतीजा है। आज येह जो इज़्ज़त है, एहतिराम है, आज़ादी है, येह महब्बत है येह सब कुछ प्यारे आक़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात का सदक़ा है, जब हम पर दुन्या में कोई एहसान करता है तो हम उन का शुक्रिय्या अदा करते नहीं थकते तो हमारी ज़िन्दगी जिन के सदक़े मिली है उस का हक़ तो येही हुवा कि एक एक सांस नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत कर के, उन की दी गई तालीम पर अमल कर के, उन की सुन्नतों से महब्बत कर के उन पर हर हर लम्हा अमल कर के गुज़ारनी चाहिए। इस के लिए दावते इस्लामी के महके महके और पाकीज़ा व ख़ुश्बूदार दीनी माहोल से बेहतर कोई माहोल नहीं। आप का तअल्लुक़ ज़िन्दगी के जिस भी शोबे से हो, फ़िक्र न कीजिए! दावते इस्लामी आप को हर जगह और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर राहनुमाई फ़राहम करती नज़र आएगी, मसलन ढाई साल की उम्र में अपनी बेटी को जदीद दुन्यावी तालीम के साथ साथ फ़र्ज़ इल्मे दीन सिखाने के लिए दारुल मदीना (स्कूलिंग सिस्टम) में दाख़िल करवाइए या फिर थोड़ी बड़ी उम्र की हो तो उसे क़ुरआने करीम नाज़िरा व हिफ़्ज़ करवाने के लिए मद्रसतुल मदीना गर्ल्ज़ और इल्मे दीन सीखने सिखाने के लिए जामिअतुल मदीना गर्ल्ज़ में दाख़िल करवा दीजिए। पस बेटी के दिल में क़ुरआनो सुन्नत की महब्बत पैदा करना ज़रूरी है ताकि क़ुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ वोह अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार दे क्यूंकि क़ुरआनो सुन्नत पर अमल ही दोनों जहां में कामयाबी का सबब है। अल्लाह पाक हमें अपनी औलाद की शरई तक़ाज़ों के मुताबिक़ बेहतरीन तरबियत करने और उन के दिलों में इश्क़े मुस्तफ़ा व इताअते मुस्तफ़ा के जज़्बे को पैदा करना नसीब फ़रमाए।

## तहरीरी मुक़ाबला उनवानात बराए दिसम्बर 2024 ईसवी

01 हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुरआनी नसीहतें

02 रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का 6 चीज़ों के बयान से तरबियत फ़रमाना

03 ज़ू रहम रिश्तेदारों के हुक़ूक़

**मज़मून भेजने की आख़िरी तारीख़ : 20 सितम्बर 2024 ईसवी**

**मज़मून लिखने में मदद (HELP) के लिए इन नम्बर्ज़ पर राबिता करें**

अजमेर रीजन +917668719040 देहली कोलकाता रीजन +918081657725 मुम्बई रीजन +918057889427

mazmoonnigarihind@gmail.com

# इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

## 1 औरत ना महरम से कान छिदवा सकती है ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या बालिग़ा औरत अपने कान किसी ग़ैर महरम से छिदवा सकती है ? जब कि वोह ग़ैर महरम ज़ियादा उम्र का हो । शरीअत इस बारे में हमारी क्या रहनुमाई करती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औरत के कान भी आज़ाए सित्र में दाख़िल हैं और अजनबी मर्द का बिला ज़रूरते शरईय्या किसी बालिग़ा औरत या मुश्तहात (क़ाबिले शहवत) लड़की के आज़ाए सित्र को देखना या उन आज़ा को छूना सख़्त नाजाइज़ व हराम है, अहादीसे मुबारका में इस की शदीद मज़म्मत बयान हुई है । वाज़ेह हुवा कि औरत का बड़ी उम्र के अजनबी मर्द से भी कान छिदवाना बिलाशुबा नाजाइज़ व हराम है, इस सूरत में मर्द व औरत दोनों ही गुनहगार होंगे और उन पर तौबा करना लाज़िम होगा ।

नामहरमा को छूने से मुतअल्लिक़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान अल मोजमुल कबीर में कुछ यूं मज़कूर है :

لان یطعن فی رأس أحدکم بمخیط من حدید خیرله من أن یمس امراة لاتحل له

यानी तुम में से किसी के सर में लोहे का सुवा (बड़ी सूई) चुभो दिया जाए, येह उस से ज़ियादा बेहतर है कि वोह किसी ऐसी औरत को छूए जो उस के लिए हलाल न हो ।

(المعجم الکبیر للطبرانی، 211/20، حدیث: 486-فتح القدیر علی الھدایہ، 262/12 فتاوٰی رضویہ، 239/22، 240-بہارِ شریعت، 446/3 ملتقطاً)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 इन्सानी दूध से मुतअल्लिक़ मसाइले शरइय्या

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरे बच्चे ने हाल ही में दूध पीना छोड़ा है । कभी कभार ऐसा होता है कि खुद ब खुद ब्रेस्ट से दूध आने लग जाता है । तो क्या ऐसी सूरत में वुज़ू टूट जाएगा और कपड़े नापाक हो जाएंगे ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में न वुज़ू टूटेगा और न ही कपड़े नापाक होंगे । क्यूंकि क़वानीने शरइय्या की रौशनी में वुज़ू या ग़ुस्ल वाजिब करने वाली और कपड़ों को नापाक करने वाली चीज़ का हदस व नजिस होना ज़रूरी है जब कि फ़ुक़हाए किराम की तसरीहात के मुताबिक़ इन्सानी दूध पाक है, नजिस नहीं । (خزانۃ المفتین، 4/1 مخطوط - فتاوٰی رضویہ، 364/1)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# रबीउ़ल अव्वल के चन्द अहम वाक़िआ़त

| तारीख़-माह-सिन | नाम / वाक़िआ़ | मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए |
|---|---|---|
| 5 रबीउ़ल अव्वल 50 हिजरी | यौमे शहादत नवासए रसूल, ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 और इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात |
| 10 रबीउ़ल अव्वल 10 हिजरी | यौमे विसाल ह़ज़रते इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1440 हिजरी और सीरते मुस्त़फ़ा सफ़ह़ा 688 |
| 12 रबीउ़ल अव्वल 241 हिजरी | यौमे विसाल ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी और फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल |
| 13 रबीउ़ल अव्वल 227 हिजरी | यौमे उ़र्स मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1440 हिजरी |
| 14 रबीउ़ल अव्वल 94 हिजरी | यौमे विसाल असीरे करबला ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी और इरशादाते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन |
| 14 रबीउ़ल अव्वल 179 हिजरी | यौमे विसाल मालिकियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी और इमाम मालिक का इ़श्क़े रसूल |
| 21 रबीउ़ल अव्वल 1052 हिजरी | यौमे विसाल ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी और 1440 हिजरी |
| रबीउ़ल अव्वल 12 हिजरी | जंगे यमामा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त में नुबुव्वत के झूटे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग हुई जिस में 1200 मुसलमान शहीद हुए और अल्लाह पाक ने मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई । | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी और फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, सफ़ह़ा 381 ता 390 |
| रबीउ़ल अव्वल 50 हिजरी | विसाले मुबारका उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439, 1441 हिजरी और फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन |

**अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

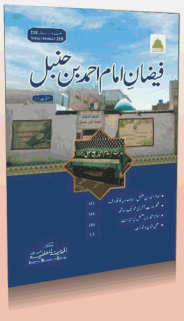

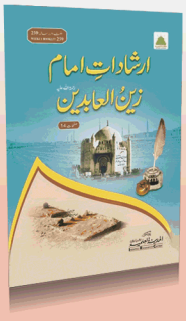


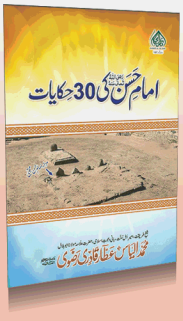


इस महीने की मुनासिबत से इन रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिए :

# जश्ने विलादत पर केक काटना

अज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

अल्लाह पाक की बे शुमार नेमतों में से सब से अ़ज़ीम नेमत हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, अह़मदे मुज्तबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। कुरआने करीम ने हमें नेमत मिलने पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का शुक्र अदा करने और उस नेमत पर ख़ुशी मनाने की रग़बत दिलाई है मगर याद रहे ख़ुशी के इस मौक़अ़ पर वोही त़रीक़ा इख़्तियार करना होगा जिस में गुनाह न हो, यानी नाच गाना, ढोल बजाना, ना मह़रम मर्द और औ़रतों का बे पर्दा जम्अ़ होना वग़ैरा न पाया जाए। अगर ऐसा हो तो येह हरगिज़ शुक्राने नेमत नहीं। ह़ज़रते ज़ियाद बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : "नेमत पाने वाले पर अल्लाह पाक का एक ह़क़ येह है कि वोह उस नेमत के ज़रीए ना फ़रमानी का मुर्तकिब न हो।" (तारीख़े मदीना दिमश्क़, 19/191) लिहाज़ा जश्ने विलादत मनाने का कोई भी ऐसा त़रीक़ा जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो, उस से बचना ज़रूरी है।

पिछले कुछ सालों से बाज़ जगहों पर जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर केक काटने का रवाज चल रहा है। केक काटना अगर्चे जाइज़ है, मगर जश्ने विलादत के उस केक पर कोई "नक़्शे नाले पाक" बनाता है, कोई ईदे मीलादुन्नबी लिखता है, तो कोई गुम्बदे ख़ज़रा बनाता है और कोई रसूले मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक "मुह़म्मद" लिखवाता है। इस त़रह़ करने वालों को ख़ुद ग़ौर करना चाहिए कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे मुबारक, नक़्शे नाले पाक और गुम्बदे ख़ज़रा हमें दिलो जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं और कोई भी ज़ी शुऊ़र शख़्स नहीं चाहता कि ख़ुद अपने हाथों से अपने दिल पर छुरी फेरे तो फिर इन मुबारक नामों और मुक़द्दस चीज़ों पर छुरी चलाने को किस त़रह़ दिल चाहता है? लिहाज़ा इ़श्क़े रसूल का तक़ाज़ा येही है कि न ऐसा किया जाए न ऐसी जगह जाया जाए जहां ऐसा किया जाता हो। इसी त़रह़ बाज़ जगहों पर बहुत बड़े बड़े साइज़ के केक बनाए जाते हैं और फिर काट कर अ़वाम में तक़्सीम किए जाते हैं और उस मौक़अ़ पर مَعَاذَ اللّٰہ म्यूज़िक और तालियां भी बजती हैं जो कि गुनाह के काम हैं और शम्अ़ भी बुझाई जाती हैं, مَعَاذَ اللّٰہ जश्ने विलादत के नाम पर होने वाले येह त़रीक़े इन्तिहाई ग़लत़ हैं। हां जश्ने विलादत की ख़ुशी में बिरयानी, पुलाव या मिठाई वग़ैरा लोगों को खिलाना या मज़ेदार शरबत या दूध पिलाना जाइज़ बल्कि अल्लाह की रिज़ा के लिए हो तो बाइ़से सवाब है।

ह़ज़रते इमाम क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैदाइश के महीने में अहले इस्लाम हमेशा से मह़फ़िलें मुन्अ़क़िद करते, दावतों का एहतिमाम करते, रबीउ़ल अव्वल की रातों में मुख़्तलिफ़ सदक़ात करते और ख़ुशी का इज़्हार करते चले आ रहे हैं। (مواہب لدنیہ، 1/78) अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के सब से आख़िरी नबी की विलादत की ख़ुशी के मौक़अ़ पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल इन कामों के साथ साथ मदनी क़ाफ़िलों में भी सफ़र करते हैं और माहे विलादत रबीउ़ल अव्वल में चांद रात से बारहवीं रात तक होने वाले मदनी मुज़ाकरों में शरीक होते और बारह रबीउ़ल अव्वल को सुब्ह़े बहारां के वक़्त ख़ूब सोज़ो रिक़्क़त के साथ दुरूदों और नातों के फूल निछावर करते हैं। ऐ आ़शिक़ाने रसूल : आप भी ईदे मीलादुन्नबी ऐसे अन्दाज़ से मनाइए जो अल्लाह पाक की ख़ुशनूदी का सबब और बाइ़से अज्रो सवाब हो।


मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

مكتبة المدينة MAKTABA TUL MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है



**PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER**

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)

**PLACE OF PRINTING :** MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.

**PLACE OF PUBLICATION :** BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.